RNI No. UPHIN/2000/03766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

1 मई-2026

वैश्विक युद्ध और हिन्दुत्व का पथ

कथन

आज महिलाएं सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। सैनिक के रूप में वे देश की सीमाओं की रक्षा कर रही हैं। वैज्ञानिक के रूप में प्रयोगशालाओं में शोध कर रही हैं। खेल प्रतिस्पर्धाओं में अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का तिरंगा लहरा रही हैं। राजनीति, समाज सेवा, प्रशासन तथा व्यापार जगत सभी क्षेत्रों में महिलाएं नई ऊंचाइयां छू रही हैं। देश भर के दीक्षांत समारोहों में उपाधि और पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में बेटियों की बढ़ती संख्या प्रेरणादायक दृश्य प्रस्तुत करती है। लेकिन यह भी सच है कि महिलाएं आज भी हिंसा, आर्थिक असमानता, सामाजिक रूढ़ियों और स्वास्थ्य संबंधी उपेक्षाओं का सामना कर रही हैं। इन बाधाओं को दूर करके ही महिला सशक्तीकरण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। **– द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति**

"नोएडा का ये एयरपोर्ट, आगरा, मथुरा, अलीगढ़, गाजियाबाद, मेरठ, इटावा, बुलंदशहर, फरीदाबाद, इस पूरे क्षेत्र को बहुत बड़ा लाभ होने वाला है। हिन्दुस्तान को और उत्तर प्रदेश को तो होना ही होना है। ये एयरपोर्ट पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों, छोटे और लघु उद्योगों, यहां के नौजवानों के लिए, अनेक नए अवसर लेकर आने वाला है। यहां से दुनिया के लिए विमान तो उड़ेंगे ही, साथ ही, ये विकसित उत्तर प्रदेश की उड़ान का भी प्रतीक बनेगा। मैं उत्तर प्रदेश को, विशेष रूप से पश्चिम उत्तर प्रदेश की जनता को इस भव्य एयरपोर्ट के लिए बहुत–बहुत बधाई देता हूँ।" **– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री**

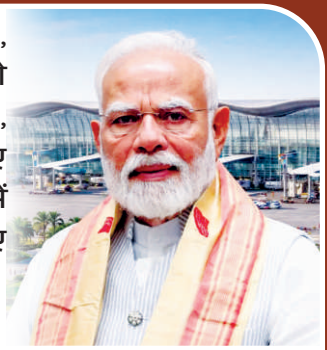

आश्रम केवल पेट भरने का नहीं, बल्कि वास्तविक ज्ञान का केन्द्र होते हैं। इनसे व्यक्ति को जीवन में इतना साहस मिलता है कि वह जीवन के थपेड़ों से लड़ने में सक्षम बनता है। आश्रम देश की एक पाठशाला है। यहां जीवन विद्या सिखायी जाती है। आश्रम में आने वाला, पाठ पढ़ने वाला, न सिर्फ अपने भौतिक शरीर को ठीक रखता है, अपितु भौतिक जीवन से बाहर भी वह अग्रेषित होता है। चौथा पुरुषार्थ धर्म है, इसकी शिक्षा आश्रमों में मिलती है। आश्रमों में जीवन को दीप जैसा बनाया जाता है जो खुद जलकर सबको प्रकाशित करता है। जीवनदीप अपेक्षा नहीं करते। प्रतिकूलता सामने आने पर काम छोड़ने वाले नहीं होते, हर परिस्थिति में कार्य करते रहते हैं। ऐसे चरित्र निर्माण का काम आश्रमों में होता है, आज भी होता है। **–डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, रा.स्व.संघ**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने कार्य की 100 वर्षों की यात्रा को पूर्ण किया है, इन सौ वर्षों में संघ ने सेवा एवं समर्पण भाव से देश सेवा एवं राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया। स्वतन्त्रता सेनानी एवं संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी ने भारत को स्वतंत्र एवं शक्तिशाली बनाने के लिए 1925 में विजयादशमी के दिन संघ कार्य प्रारम्भ किया। देश भक्ति से ओत–प्रोत एवं समाज का भला करने वाले व्यक्ति संघ की नित्य शाखा से निर्माण हो रहे हैं। संघ का कार्य हिन्दू समाज को संगठित, सशक्त एवं समर्थ बनाने के लिए चल रहा है। **–दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ**

"हम उत्तर प्रदेश की धरती पर किसी भी गुंडे या माफिया डॉन को पनपने नहीं देंगे और अगर वे ऐसा करने की हिम्मत करते हैं, तो हम यह सुनिश्चित करेंगे कि उन्हें ठीक वहीं भेजा जाए जहां उनकी जगह है, सलाखों के पीछे...सरकार राज्य के हर व्यापारी और हर बेटी की सुरक्षा और हिफाजत की गारंटी देती है...जब कोई सरकार शुद्ध और सच्ची नीयत से काम करती है और ऐसी नीतियां लागू करती है जिनमें जनहित को प्राथमिकता दी जाती है, तो इन अच्छे कामों के नतीजे सभी को साफ दिखाई देने लगते हैं" **–योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश**

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

1 मई, 2026

वर्ष : 26 अंक : 05

सलाहकार समिति

उदयभान सिंह, रविन्द्र सिंह चौहान
रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मुकेश कुमार

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

प्रबंध निदेशक

डॉ. अनिल कुमार निगम

प्रबंध संपादक

पंकज राणा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

बोलते न्यायालय.....05
हिन्दुत्व के समाचार.....06
उत्तर प्रदेश की सुर्खियां.....08
उत्तर प्रदेश में हिन्दुत्व.....09
सीमाओं का विश्लेषण.....10
भारतीय ज्ञान परम्परा का पुनर्जागरण.....12
अंतरराष्ट्रीय जगत में हिन्दुत्व.....13
प्रमुख समाचार/लव जिहाद एक विश्लेषण.....14
सोशल मीडिया में हिंदुत्व.....15
एन सी आर के समाचार.....16
आनुषांगिक संगठन.....17
सरसंघचालक -ध्येय वाक्य.....18
महिला सशक्तीकरण.....19
पुरखों की ओर/एआई.....20
डिजिटल समाचार.....21
नवाचार.....22
वीरांगनाएं.....23
महान क्रांतिकारी.....24
पुस्तक समीक्षा.....26
फिल्म समीक्षा.....27
आत्मनिर्भरता.....28
युवा संवाद.....29
खेल/उत्सव.....30
यंग अचीवर्स.....31
प्रेरक प्रसंग.....32
प्रेरक कहानी.....33
बाल कहानी/कविता.....34

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

सनातन चेतना से सशक्त भारत का निर्माण

आज जब विश्व का एक बड़ा हिस्सा संघर्ष और अस्थिरता से जूझ रहा है, तब वैश्विक समाज का एक बड़ा वर्ग भारतीय जीवन दर्शन, विशेष रूप से सनातन संस्कृति और हिंदुत्व के मूल्यों की ओर आकर्षित होता दिखाई दे रहा है। इस संदर्भ में 'हिंदुत्व' की अवधारणा को समझना अत्यंत आवश्यक है। यह कोई संकीर्ण धार्मिक विचार नहीं, बल्कि भारतीय जीवन शैली, सहिष्णुता, समरसता और व्यापक मानवीय दृष्टिकोण का प्रतीक है। 'हिंदुत्व एंड हिंदू स्वराज' जैसी कृतियाँ इस विचारधारा को ऐतिहासिक और तार्किक आधार पर प्रस्तुत करती हैं, जिससे नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जुड़ने का अवसर मिलता है। भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा सदियों से मानवता को सत्य, सदाचार और संतुलित जीवन का मार्ग दिखाती आई है। यही परंपरा आज भी विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। इसके साथ ही, आधुनिक भारत विज्ञान, तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। यही परंपरा और आधुनिकता का समन्वय भारत को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

चरैवेति चरैवेति के प्रेरणादायी मंत्र के साथ भारत अपने विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र के स्वप्न को साकार करने की दिशा में निरंतर अग्रसर है। इस पावन लक्ष्य की प्राप्ति में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। अपने शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विविध कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रनिर्माण की इस यात्रा को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान कर रहा है। वर्तमान युग में विचारों के प्रसार के लिए साहित्य व कार्यक्रमों के साथ-साथ सिनेमा और डिजिटल माध्यम भी अत्यंत प्रभावी साबित हो रहे हैं। 'धुरंधर-2' जैसी तथ्यपरक फिल्में न केवल इतिहास के विभिन्न पहलुओं को सामने लाती हैं, बल्कि समाज को एक नई दृष्टि भी प्रदान करती हैं। यदि ऐसे प्रयास संतुलित, तथ्याधारित और राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किए जाएँ, तो वे 'नए भारत' की सशक्त और प्रेरणादायी छवि निर्मित कर सकते हैं।

हालांकि, राष्ट्र निर्माण की इस यात्रा में चुनौतियां भी विद्यमान हैं। 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' जैसे महत्वपूर्ण विधेयकों पर उत्पन्न मतभेद और विरोध यह संकेत देते हैं कि समाज में संवाद और सहमति की प्रक्रिया को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। महिलाओं के सशक्तिकरण के बिना विकसित भारत की परिकल्पना अधूरी है। अतः इस विषय पर राजनीतिक सीमाओं से ऊपर उठकर व्यापक सामाजिक सहमति बनाना समय की मांग है। आज आवश्यकता इस बात की है कि वैचारिक मतभेदों को टकराव का कारण न बनाकर संवाद का माध्यम बनाया जाए। सामाजिक संगठन, साहित्यिक प्रयास और तथ्यात्मक फिल्में सभी मिलकर एक जागरूक, आत्मविश्वासी और संगठित समाज के निर्माण में सहायक हो सकते हैं।

"विकसित भारत 2047" का लक्ष्य तभी साकार होगा, जब प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहेगा, अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करेगा और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखेगा। यही वह पथ है, जो भारत को एक सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में स्थापित करेगा।

धर्मांतरण और संवैधानिक व्यवस्था : आरक्षण की सीमा पर स्पष्ट होता न्यायिक दृष्टिकोण

संकलन – डॉ. आभा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने धर्म परिवर्तन और अनुसूचित जाति से जुड़े अधिकारों पर एक महत्वपूर्ण फैसला दिया है, जिसने पूरे देश में नई चर्चा शुरू कर दी है। यह निर्णय 24 मार्च 2026 को आया, जिसमें अदालत ने स्पष्ट किया कि धर्म बदलने के बाद एससी/एसटी आरक्षण और कानूनी संरक्षण का लाभ मिल सकता है या नहीं। यह मामला आंध्र प्रदेश से जुड़ा था, जहाँ एक व्यक्ति, जो मूल रूप से अनुसूचित जाति समुदाय से था, ने बाद में ईसाई धर्म अपना लिया और पादरी के रूप में कार्य करने लगा।

जब यह मामला अदालत में पहुंचा, तो आरोपियों ने यह तर्क दिया कि चूँकि वह व्यक्ति अब ईसाई धर्म अपना चुका है, इसलिए उसे अनुसूचित जाति का दर्जा और उससे जुड़े विशेष अधिकारों का लाभ नहीं मिल सकता। यह विवाद पहले हाई कोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा। आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट (2025) ने अपने फैसले में कहा कि धर्म परिवर्तन के बाद व्यक्ति की कानूनी पहचान बदल जाती है और वह अनुसूचित जाति के तहत मिलने वाले विशेष अधिकारों का दावा नहीं कर सकता। अदालत ने यह भी कहा कि ईसाई धर्म में जाति व्यवस्था को मान्यता नहीं दी जाती, इसलिए अनुसूचित जाति की अवधारणा वहां लागू नहीं होती।

इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने 24 मार्च 2026 को अंतिम निर्णय देते हुए हाई कोर्ट के फैसले को सही ठहराया। अदालत ने स्पष्ट किया कि यदि कोई व्यक्ति हिंदू, सिख या बौद्ध धर्म छोड़कर किसी अन्य धर्म को अपनाता है, तो उसका अनुसूचित जाति का दर्जा समाप्त हो जाता है। इसके साथ ही वह व्यक्ति आरक्षण, सरकारी योजनाओं और एससी/एसटी एक्ट के तहत मिलने वाले कानूनी संरक्षण का लाभ नहीं ले सकता। कोर्ट ने अपने निर्णय में संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 का उल्लेख करते हुए कहा कि अनुसूचित जाति का दर्जा केवल कुछ विशेष धर्मों तक सीमित है और यह प्रावधान स्पष्ट एवं बाध्यकारी है।

इस फैसले से स्पष्ट होता हैं की धर्म परिवर्तन करने वाले व्यक्तियों को यह समझना होगा कि यह केवल धार्मिक निर्णय नहीं, बल्कि इसके साथ संवैधानिक अधिकार भी जुड़े होते हैं। हालांकि, इस निर्णय ने यह बहस भी शुरू कर दी है कि क्या सामाजिक भेदभाव केवल धर्म परिवर्तन से समाप्त हो जाता है या नहीं। यह फैसला कानून की दृष्टि को पूरी तरह स्पष्टता प्रदान करता है और आने वाले समय में धर्मांतरण तथा आरक्षण से जुड़े मामलों में एक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में देखा जाएगा।

सबरीमाला मंदिर विवाद : आस्था, समानता और संविधान के बीच संतुलन की खोज

केरल स्थित सबरीमाला मंदिर का विवाद भारतीय समाज और न्यायपालिका के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न बनकर उभरा है, जिसमें आस्था, परंपरा, समानता और संवैधानिक अधिकारों के बीच संतुलन स्थापित करने की चुनौती दिखाई देती है। भगवान अयप्पा को समर्पित इस मंदिर में लंबे समय से 10 से 50 वर्ष की आयु की महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध था, जिसे भगवान अयप्पा के 'नैष्ठिक ब्रह्मचर्य' से जोड़ा जाता है। यह विवाद 2006 में शुरू हुआ, जब इस परंपरा को अदालत में चुनौती दी गई। याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि यह प्रतिबंध संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता) और अनुच्छेद 25 (धर्म की स्वतंत्रता) का उल्लंघन करता है। वहीं, मंदिर प्रशासन और श्रद्धालुओं का मानना था कि यह परंपरा मंदिर की धार्मिक पहचान और विशेष आस्था से जुड़ी है, इसलिए इसमें हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। इस मामले में एक बड़ा मोड़ 28 सितंबर 2018 को आया, जब सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने 4:1 के बहुमत से महिलाओं के प्रवेश पर लगे प्रतिबंध को असंवैधानिक घोषित कर दिया। अदालत ने कहा कि लैंगिक आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव संविधान की मूल भावना के विरुद्ध है। इस फैसले के बाद मंदिर के द्वार सभी आयु वर्ग की महिलाओं के लिए खोल दिए गए। हालांकि, इस निर्णय के बाद देशभर में विरोध प्रदर्शन हुए। इसके बाद 2019 में पुनर्विचार याचिकाएं दायर की गईं।

अप्रैल 2026 तक, यह मामला नौ सदस्यीय संविधान पीठ के समक्ष विचाराधीन है। हालिया सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने यह संकेत दिया है कि धार्मिक आस्था को पूरी तरह नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और करोड़ों लोगों की भावनाओं का सम्मान भी आवश्यक है। साथ ही अदालत ने यह भी स्पष्ट किया है कि मौलिक अधिकारों की रक्षा सर्वोपरि है और दोनों के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। सबरीमाला विवाद का महत्व इस बात में है कि यह केवल एक मंदिर या परंपरा का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज की जटिलता को दर्शाता है, जहाँ परंपरा और आधुनिक संवैधानिक मूल्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करना चुनौतीपूर्ण है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि सबरीमाला मंदिर विवाद भारतीय लोकतंत्र के सामने एक महत्वपूर्ण परीक्षा है। आने वाला अंतिम निर्णय यह तय करेगा कि आस्था और समानता के बीच संतुलन किस प्रकार स्थापित किया जाएगा और न्यायपालिका किस सीमा तक धार्मिक परंपराओं में हस्तक्षेप कर सकती है।

संपूर्ण देश में हिन्दुत्व के समाचार

संकलन – डॉ. रामशंकर, सहायक प्राध्यापक, आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

18 मार्च 2026– उज्जैन महाकाल क्षेत्र विकास हेतु अतिरिक्त बजट जारी : उज्जैन स्थित महाकाल क्षेत्र विस्तार योजना के लिए राज्य सरकार ने अतिरिक्त बजट जारी किया। राशि से प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छता, यात्री प्रतीक्षालय, नदी तट सौंदर्यीकरण और सुरक्षा प्रबंध सुदृढ़ किए जाएंगे।

19 मार्च 2026– चारधाम यात्रा मार्ग पर स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ीं : उत्तराखंड सरकार ने आगामी चारधाम यात्रा से पहले मार्गों पर अतिरिक्त स्वास्थ्य केंद्र, मोबाइल एम्बुलेंस, ऑक्सीजन सहायता और पुलिस चौकियां स्थापित करने का निर्णय लिया। अधिकारियों ने कहा कि तीर्थयात्रियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता रहेगी और मौसम निगरानी भी की जाएगी।

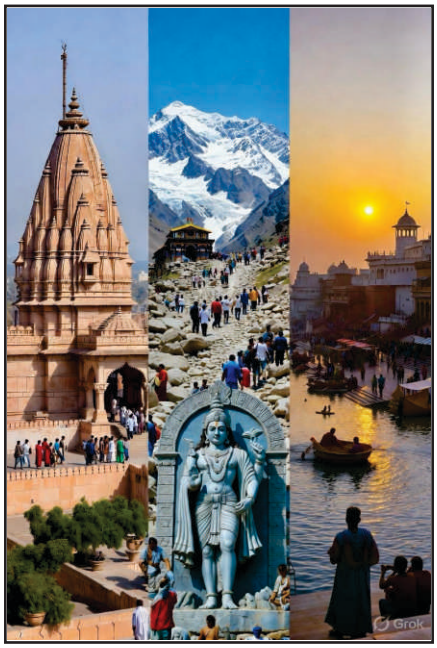

20 मार्च 2026–दिल्ली में प्राचीन मंदिरों के संरक्षण सर्वे की शुरुआत : नई दिल्ली प्रशासन ने राजधानी के प्राचीन मंदिरों और धार्मिक स्थलों का विस्तृत सर्वे शुरू किया। सूची तैयार कर संरचनात्मक मरम्मत, प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छता और विरासत सूचना पट्ट लगाने की योजना बनाई गई। विशेषज्ञ दल अगले सप्ताह रिपोर्ट सौंपेगा।

21 मार्च 2026– राजस्थान में तीर्थ पर्यटन सर्किट विस्तार योजना लागू : राजस्थान सरकार ने प्रमुख मंदिरों और धार्मिक स्थलों को जोड़ने वाली तीर्थ पर्यटन सर्किट योजना के विस्तार को मंजूरी दी। परियोजना में सड़क सुधार, विश्राम केंद्र, बस सेवाएं और स्वच्छता सुविधाएं विकसित की जाएंगी। पर्यटन विभाग ने ग्रामीण रोजगार बढ़ने की संभावना जताई।

22 मार्च 2026– बिहार में रामायण सर्किट परियोजना को प्रशासनिक मंजूरी : बिहार सरकार ने रामायण से जुड़े धार्मिक स्थलों के विकास हेतु रामायण सर्किट परियोजना को स्वीकृति दी। योजना में सड़क संपर्क, प्रकाश व्यवस्था, पर्यटन संकेतक और सांस्कृतिक मंच निर्माण शामिल हैं।

23 मार्च 2026– गुजरात के मंदिर नगरों में विशेष सफाई अभियान शुरू : गुजरात सरकार ने प्रमुख मंदिर नगरों में स्वच्छता, कचरा प्रबंधन और पेयजल व्यवस्था सुधारने के लिए विशेष अभियान शुरू किया। स्थानीय निकायों को अतिरिक्त संसाधन दिए गए हैं।

24 मार्च 2026– कर्नाटक में प्राचीन मठ अभिलेख डिजिटलीकरण शुरू : कर्नाटक सरकार ने प्राचीन मठों, मंदिर अभिलेखों और पांडुलिपियों के डिजिटलीकरण की योजना शुरू की। परियोजना का उद्देश्य सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखना और शोधार्थियों को डिजिटल पहुंच उपलब्ध कराना बताया गया। तकनीकी दलों ने प्रारंभिक कार्य आरंभ किया।

25 मार्च 2026– राष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन नीति का मसौदा तैयार : भारत सरकार ने धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नई राष्ट्रीय नीति का प्रारूप तैयार किया। मसौदे में तीर्थ अवसंरचना, सुरक्षा, स्वच्छता, डिजिटल टिकटिंग और स्थानीय रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान दिया गया है।

26 मार्च 2026– प्रयागराज मेला क्षेत्र के स्थायी विकास कार्य तेज : प्रयागराज में मेला क्षेत्र को स्थायी सुविधाओं से जोड़ने की योजना पर काम तेज किया गया। परियोजना में सड़क निर्माण, प्रकाश व्यवस्था, स्वच्छता केंद्र और यात्री सुविधाओं का विस्तार शामिल है।

27 मार्च 2026– हरिद्वार घाटों पर सुरक्षा निगरानी व्यवस्था बढ़ाई गई : हरिद्वार प्रशासन ने प्रमुख घाटों पर सीसीटीवी कैमरे, ड्रोन निगरानी और अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया। त्योहारों में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए भीड़ नियंत्रण और आपात सहायता व्यवस्था भी मजबूत की गई है।

28 मार्च 2026– महाराष्ट्र में मंदिर ट्रस्ट पारदर्शिता पोर्टल लॉन्च : महाराष्ट्र सरकार ने मंदिर ट्रस्टों की आय–व्यय जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध कराने के लिए नया पोर्टल शुरू किया। इससे दान, खर्च और योजनाओं की पारदर्शिता बढ़ेगी। श्रद्धालुओं को डिजिटल माध्यम से जानकारी प्राप्त करने की सुविधा मिलेगी।

29 मार्च 2026– चेन्नई में रामनवमी उत्सव तैयारियां शुरू : चेन्नई शहर के प्रमुख मंदिरों में रामनवमी आयोजन को लेकर तैयारियां तेज कर दी गईं। भजन संध्या, शोभायात्रा,

प्रसाद वितरण और सुरक्षा प्रबंधों को लेकर समितियों ने कई बैठकें आयोजित कीं। श्रद्धालुओं में उत्साह देखा गया।

30 मार्च 2026– देशभर में मंदिर पर्यटन बढ़ाने की संयुक्त पहल : भारत केंद्र और राज्यों ने प्रमुख मंदिर स्थलों पर यात्री सुविधाएं सुधारने की संयुक्त पहल शुरू की। योजना में स्वच्छता, डिजिटल सूचना केंद्र, पार्किंग और स्थानीय रोजगार सृजन को प्राथमिकता दी गई है।

31 मार्च 2026– अयोध्या में श्रद्धालुओं के लिए ई-गाइड सेवा शुरू : अयोध्या प्रशासन ने तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए ई–गाइड सेवा शुरू की। मोबाइल आधारित प्रणाली से मंदिर मार्ग, दर्शन समय, पार्किंग और आवास संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी।

1 अप्रैल 2026– वाराणसी घाट क्षेत्र में विशेष स्वच्छता अभियान शुरू : वाराणसी प्रशासन ने गंगा घाटों और मंदिर क्षेत्रों में विशेष सफाई अभियान शुरू किया। अतिरिक्त सफाईकर्मियों की तैनाती की गई है। तीर्थयात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए पेयजल और शौचालय सुविधाएं भी बढ़ाई गईं।

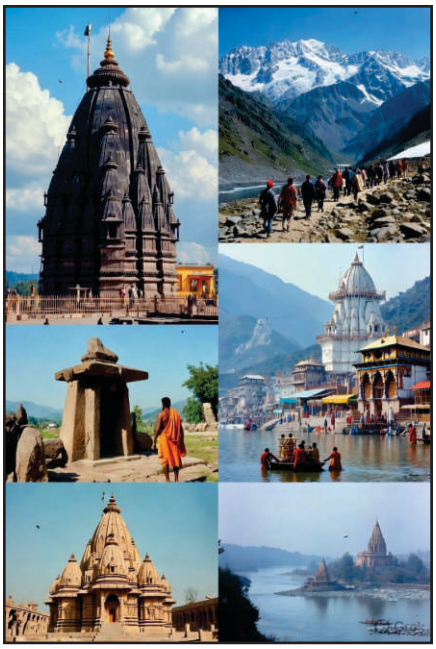

2 अप्रैल 2026– उज्जैन महाकाल मार्ग पर नई यातायात योजना लागू : उज्जैन महाकाल मंदिर क्षेत्र में श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु नई यातायात योजना लागू की गई। पार्किंग जोन, बैरिकेडिंग और शटल सेवा शुरू की गई। प्रशासन ने त्योहार अवधि में सुगम दर्शन व्यवस्था का दावा किया।

3 अप्रैल 2026 – हरिद्वार में तीर्थ सुरक्षा हेतु कंट्रोल रूम सक्रिय : हरिद्वार प्रशासन ने पर्व सीजन को देखते हुए एकीकृत कंट्रोल रूम सक्रिय किया। सीसीटीवी निगरानी, सार्वजनिक सूचना प्रणाली और आपातकालीन सहायता सेवाएं चौबीस घंटे उपलब्ध रहेंगी।

5 अप्रैल 2026 – राजस्थान में धार्मिक स्थलों तक अतिरिक्त बस सेवा शुरू : राजस्थान सरकार ने प्रमुख मंदिर नगरों और तीर्थ स्थलों के लिए अतिरिक्त बस सेवाएं शुरू कीं। सप्ताहांत और पर्व अवधि में यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए विशेष रूट तय किए गए।

6 अप्रैल 2026– बिहार में सीता सर्किट विकास कार्यों का शुभारंभ : बिहार सरकार ने माता सीता से जुड़े धार्मिक स्थलों के विकास कार्य शुरू किए। परियोजना में सड़क सुधार, संकेतक बोर्ड, यात्री विश्राम केंद्र और प्रकाश व्यवस्था शामिल है।

7 अप्रैल 2026– गुजरात मंदिर नगरों में पेयजल व्यवस्था सुदृढ़ : गुजरात प्रशासन ने प्रमुख मंदिर क्षेत्रों में पेयजल टैंकर, शीतल जल केंद्र और सफाई कर्मियों की संख्या बढ़ाई। त्योहारों के दौरान श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए यह व्यवस्था लागू की गई।

8 अप्रैल 2026 – कर्नाटक में प्राचीन मंदिर अभिलेख ऑनलाइन उपलब्ध : कर्नाटक सरकार ने कई प्राचीन मंदिरों के अभिलेख डिजिटल पोर्टल पर उपलब्ध कराए। शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों और आम नागरिकों को ऐतिहासिक दस्तावेजों तक ऑनलाइन पहुंच मिलेगी।

9 अप्रैल 2026– प्रयागराज संगम क्षेत्र में यात्री सुविधाएं बढ़ीं : प्रयागराज संगम क्षेत्र में शौचालय, प्रकाश व्यवस्था, पेयजल केंद्र और सुरक्षा चौकियां बढ़ाई गईं। प्रशासन ने तीर्थयात्रियों की सुविधा को प्राथमिकता बताते हुए साफ–सफाई और यातायात नियंत्रण के लिए अतिरिक्त कर्मियों की तैनाती की।

11 अप्रैल 2026– चेन्नई मंदिरों में भक्ति संगीत समारोह आरंभ : चेन्नई रामनवमी पूर्व शहर के प्रमुख मंदिरों में भक्ति संगीत समारोह शुरू हुए। श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु स्वयंसेवकों की तैनाती, प्रसाद वितरण केंद्र और स्वच्छता व्यवस्था बढ़ाई गई।

13 अप्रैल 2026– अहमदाबाद में रामनवमी मेले के लिए प्रबंध बढ़े : अहमदाबाद मंदिर समितियों ने रामनवमी मेले के लिए पार्किंग, प्रसाद वितरण, सुरक्षा बैरिकेडिंग और चिकित्सा सहायता केंद्रों की व्यवस्था बढ़ाई। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ आने की संभावना को देखते हुए प्रशासन ने निगरानी दल तैनात किए।

14 अप्रैल 2026– हरिद्वार घाटों पर विशेष सफाई अभियान चलाया गया : हरिद्वार पर्व सीजन से पहले प्रशासन ने प्रमुख घाटों पर विशेष सफाई अभियान चलाया। कचरा निस्तारण, जल स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा संकेतकों को दुरुस्त किया गया। नगर निगम ने अतिरिक्त सफाईकर्मियों की तैनाती की।

15 अप्रैल 2026– केंद्र ने धार्मिक पर्यटन परियोजनाओं की समीक्षा की : भारत केंद्र सरकार ने राज्यों के साथ धार्मिक पर्यटन परियोजनाओं की समीक्षा बैठक की। तीर्थ अवसंरचना, सुरक्षा, स्वच्छता, डिजिटल सेवाओं और यात्री सुविधाओं की प्रगति पर विस्तृत चर्चा हुई। लंबित योजनाओं को शीघ्र पूरा करने के निर्देश जारी किए गए।

गौरक्षा के लिए मथुरा प्रशासन की विशेष पहल

–डेस्क

मथुरा में गौरक्षक 'फरसे वाले बाबा' की मौत ने जिला प्रशासन को पूरी तरह अलर्ट मोड पर डाल दिया है। अब पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी सीधे जमीन पर उतरकर गोरक्षक दलों के साथ संवाद कर रहे हैं। गोवर्धन से लेकर जिले के कोने–कोने में बैठकें हुईं। उद्देश्य एक – गोवंश की सुरक्षा और तस्करी पर 'फुल स्टॉप'। एसडीएम ने गोरक्षकों और गोसेवकों के साथ बैठक में गायों के सरंक्षण और संवर्धन के लिए एक सीक्रेट प्लान तैयार किया है। इसमें बेसहारा गायों के लिए सुरक्षित आश्रय, बीमार या घायल गोवंश को तत्काल इलाज मिले, साथ ही गोतस्करी रोकने के लिए खुफिया तंत्र को मजबूत करने पर जोर दिया गया। संवेदनशील रास्तों पर गश्त बढ़ाई जाएगी और गोरक्षकों के

नेटवर्क का इस्तेमाल संदिग्ध गतिविधियों को पकड़ने में किया जाएगा। अधिकारियों ने साफ कर दिया है कि गोवंश के साथ किसी भी तरह की क्रूरता बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पीएम मोदी ने किया जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट का उद्घाटन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गौतमबुद्ध नगर के जेवर में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का भव्य उद्घाटन कर दिया है। एयरपोर्ट प्रशासन के अनुसार, शुरुआती चरण में यहां से 10 प्रमुख शहरों (मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, कोलकाता, पुणे, लखनऊ, अहमदाबाद, चेन्नई, गोवा और जयपुर) के लिए सीधी घरेलू और कार्गो उड़ानें शुरू की जाएंगी। आने वाले समय में इस नेटवर्क को विस्तार देकर कुल 65 शहरों तक पहुंचाने का लक्ष्य है। लगभग 3 किलोमीटर से अधिक लंबे रनवे वाला यह एयरपोर्ट न केवल नोएडा और एनसीआर, बल्कि पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तस्वीर बदल देगा। स्थानीय लोगों की खुशी और उत्साह इस बात का

प्रमाण है कि वे इस एयरपोर्ट को क्षेत्र की प्रगति के लिए 'मील का पत्थर' मान रहे हैं।

भारत की आध्यात्मिक संवेदना का परिचय श्री राम मंदिर

श्री अयोध्या जी धाम में प्रभु श्री राम का मंदिर केवल आस्था और भक्ति का ही केंद्र नहीं है। यह देश के सुदूर भागों में रहने वाले अनेक लोगों को भारत की आध्यात्मिक संवेदना का परिचय भी करा रहा है। इसका ही एक उदाहरण है असम के डिब्रूगढ़ स्थित मनोहारी टी एस्टेट से आए 30 कर्मयोगियों का पहला दल जो पहली बार अपने सीमित दायरे से बाहर निकला और इस दल के लिए अयोध्या का अनुभव केवल तीर्थ नहीं, बल्कि एक भावनात्मक और सांस्कृतिक जागरण बन गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से शुरू हुई इस पहल ने उन श्रमिकों को रामलला के दरबार तक पहुंचाया, जो अब तक बाहरी दुनिया से लगभग अनजान थे। उनके लिए एक नए अनुभव और गहरे कौतूहल का केंद्र बना रही उनकी यह तीर्थ यात्रा काशी जाकर बाबा श्री काशी विश्वनाथ जी के दर्शन के लिए रवाना हुई।

रामपुर में 200 हिंदू बेटियों को दिखाई 'द केरला स्टोरी-2'

–डेस्क

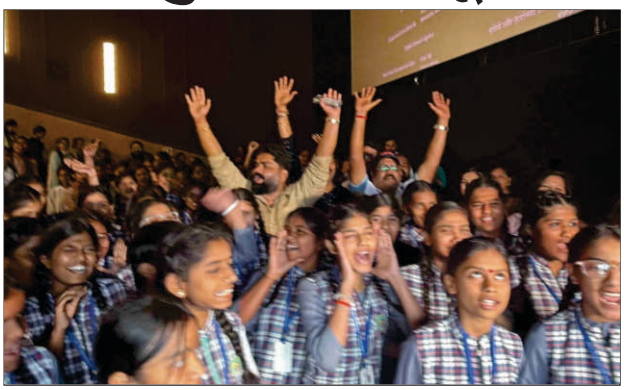

रामपुर में हिंदू संगठन की पहल पर लगभग 200 हिंदू छात्राओं को एक निजी सिनेमा हॉल में 'द केरला स्टोरी–2' फिल्म दिखाई गई। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को जागरूक करना और उन्हें शिक्षा, परिवार तथा अपने धर्म के प्रति जिम्मेदारियों को समझने का संदेश देना था। इस पहल के द्वारा बेटियों को किसी भी तरह के बहकावे में न आने और अपने भविष्य को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा व आत्मनिर्भरता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया गया। उन्हें यह भी समझाया गया कि वे दूसरे समुदाय के लोगों के झांसे में आकर धर्म परिवर्तन जैसी घटनाओं से दूर रहें। फिल्म देखने के बाद छात्राओं ने अपनी प्रतिक्रियाएं दीं। कुछ ने कहा कि माता–पिता से बढ़कर कोई नहीं होता और उनके मार्गदर्शन में ही आगे बढ़ना चाहिए। कुछ छात्राओं का मत था कि यदि उन्हें अपने धर्म और संस्कृति की सही जानकारी होगी, तो कोई भी उन्हें गुमराह नहीं कर पाएगा।

श्रीराम की नगरी अयोध्या में अभियान के तहत 'पांडुलिपि संरक्षण यज्ञ'

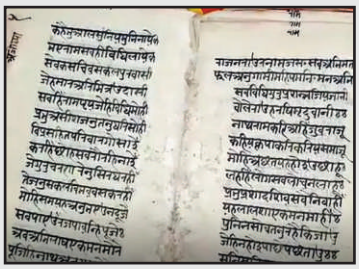

श्री रामचरितमानस की लगभग 300 वर्ष पुरानी हस्तलिखित पांडुलिपि मिली है। अमेठी निवासी जगजीत सिंह ने इस अनमोल पांडुलिपि को वर्षों से सहेजकर रखा था। नई दिल्ली स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय के अध्यक्ष और राम मंदिर ट्रस्टी नृपेंद्र मिश्र के निर्देशन में रामकथा संग्रहालय 'रिपोजिटरी सेंटर' में देशभर से प्राचीन और हस्तलिखित पांडुलिपियों को एकत्र करने का विशेष अभियान चलाया जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, यह पांडुलिपि न सिर्फ धार्मिक दृष्टि से बल्कि भाषाई और ऐतिहासिक अध्ययन के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है। इससे प्राचीन देवनागरी लिपि की संरचना, अक्षरों की बनावट और लेखन शैली को समझने में नई दिशा मिलेगी. उस समय की लेखन शैली आज की आधुनिक देवनागरी से काफी भिन्न थी, जो इस धरोहर को और भी खास बनाती है।

चार धाम तीर्थयात्रा : पहले सप्ताह ही 5 लाख से अधिक पंजीकरण

19 अप्रैल से शुरू होने वाली चारधाम यात्रा में आने के लिए पहले एक सप्ताह में 5.18 लाख से अधिक तीर्थयात्रियों ने ऑनलाइन पंजीकरण कराया। केदारनाथ धाम की यात्रा के लिए सबसे अधिक 1.73 लाख लोगों ने पंजीकरण कराया। ऑफलाइन पंजीकरण की सुविधा 17 अप्रैल से शुरू होगी। देश दुनिया से यात्रा पर आने वाले तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए पर्यटन विभाग ने छह मार्च से ऑनलाइन पंजीकरण शुरू किया। एक सप्ताह में ही पंजीकरण का आंकड़ा पांच लाख पार हो गया है। पंजीकरण आंकड़ों से इस साल भी यात्रा में रिकॉर्ड तीर्थयात्रियों के आने का अनुमान लगाया जा रहा है। पर्यटन विभाग के पंजीकरण आंकड़ों के अनुसार पहले सप्ताह में ही केदारनाथ धाम के लिए 1,73,157 तीर्थयात्री पंजीकरण कर चुके हैं। जबकि बदरीनाथ धाम में 1,52,478, गंगोत्री के लिए 97,622,यमुनोत्री के लिए 95,606 पंजीकरण किए गए।

पंजाब सीमा : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की सीमाओं की सुरक्षा का विश्लेषण

संकलन– डॉ. अनुज, सहायक प्राध्यापक (अतिथि), दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म, दिल्ली विश्वविद्यालय

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना था, जिसमें पंजाब-पाकिस्तान सीमा विशेष रूप से संवेदनशील क्षेत्र के रूप में उभरी। विभाजन के दौरान व्यापक हिंसा, विस्थापन और सामाजिक अस्थिरता ने इस क्षेत्र को रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया। लगभग 532 किमी लंबी यह सीमा रावी और सतलुज नदियों के साथ फैली है और राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ-साथ आंतरिक स्थिरता के लिए भी अहम है। समय के साथ यहां सुरक्षा चुनौतियां पारंपरिक युद्ध से बदलकर आतंकवाद, तस्करी और आधुनिक तकनीकी खतरों तक विकसित हो चुकी हैं।

16 मार्च 2026– ड्रोन के जरिए नशा तस्करी विफल, BSF ने गिराया UAV : अमृतसर अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास सीमा सुरक्षा बल ने संदिग्ध ड्रोन को ट्रैक कर गिराया। ड्रोन से गिराए गए पैकेट से हेरोइन बरामद हुई। अधिकारियों के अनुसार तस्कर रात के समय ड्रोन का इस्तेमाल कर सीमा पार से नशा भेज रहे हैं। इस घटना ने स्पष्ट किया कि बॉर्डर क्षेत्र में तकनीकी निगरानी और एंटी–ड्रोन सिस्टम की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो चुकी है।

17 मार्च 2026– देशभक्ति से गूंजा बॉर्डर, युवाओं ने तिरंगा यात्रा निकाली : अटारी–वाघा सीमा पर स्थानीय युवाओं और छात्रों ने तिरंगा यात्रा निकालकर देशभक्ति का संदेश दिया। कार्यक्रम में सीमा पर तैनात सीमा सुरक्षा बल के जवानों का सम्मान किया गया। 'भारत माता की जय' के नारों से पूरा क्षेत्र गूंज उठा। यह आयोजन दर्शाता है कि सीमावर्ती क्षेत्रों में भी नागरिकों में राष्ट्रप्रेम और एकता की भावना मजबूत बनी हुई है।

20 मार्च 2026– सीमावर्ती गांव में ड्रग नेटवर्क का पर्दाफाश, हेरोइन जब्त : तरनतारन के सीमा से सटे गांव में पुलिस ने छापा मारकर ड्रग तस्करी नेटवर्क का खुलासा किया। आरोपियों के पास से भारी मात्रा में हेरोइन और हथियार मिले। जांच में पता चला कि यह नेटवर्क सीधे पाकिस्तान से जुड़ा है। सीमा क्षेत्र के युवाओं को इसमें शामिल किया जा रहा था, जिससे स्थानीय सुरक्षा और सामाजिक व्यवस्था दोनों प्रभावित हो रही हैं।

22 मार्च 2026– किसानों और जवानों का अनोखा संबंध, सीमा पर सामूहिक भोजन आयोजन : फिरोजपुर सीमा के पास स्थानीय किसानों ने जवानों के साथ सामूहिक भोजन कार्यक्रम आयोजित किया। किसानों ने अपनी फसल का अन्न सैनिकों को समर्पित किया। सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने भी ग्रामीणों के साथ समय बिताया। यह पहल भारतीय परंपरा "अतिथि देवो भव" और सेना–जनता के गहरे रिश्ते को दर्शाती है।

25 मार्च 2026– सीमा पर संदिग्ध गतिविधि, BSF का सर्च ऑपरेशन तेज : गुरदासपुर के अंतरराष्ट्रीय सीमा क्षेत्र में संदिग्ध हलचल के बाद सीमा सुरक्षा बल ने व्यापक सर्च ऑपरेशन

चलाया। रातभर गश्त बढ़ाई गई और संवेदनशील इलाकों में निगरानी कड़ी की गई। सुरक्षा एजेंसियों को घुसपैठ या तस्करी की आशंका थी। यह घटना बताती है कि सीमा पर सतत सतर्कता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

26 मार्च 2026– स्कूलों में देशभक्ति कार्यक्रम, बच्चों ने सैनिकों को भेजे संदेश : गुरदासपुर के सीमावर्ती स्कूलों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें बच्चों ने सैनिकों के लिए पत्र और शुभकामनाएं भेजीं। छात्रों ने देशभक्ति गीत और नाटक प्रस्तुत किए। यह पहल नई पीढ़ी में राष्ट्रप्रेम और सुरक्षा बलों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने का उदाहरण है। सीमा क्षेत्र में शिक्षा और राष्ट्रवाद का सुंदर समन्वय देखने को मिला।

28 मार्च 2026– सीमा क्षेत्र में आतंकी मॉड्यूल का खुलासा, हथियार बरामद : अमृतसर सीमा क्षेत्र में आईएसआई समर्थित आतंकी मॉड्यूल का पर्दाफाश हुआ। आरोपी के पास से ग्रेनेड और पिस्तौल बरामद किए गए। जांच में ड्रोन के जरिए हथियार सप्लाई की बात सामने आई। यह घटना दर्शाती है कि सीमा पर आतंकवाद और तस्करी एक साथ काम कर रहे हैं, जिससे सुरक्षा चुनौती और जटिल हो गई है।

30 मार्च 2026– BSF और ग्रामीणों का संयुक्त स्वच्छता अभियान, सीमा क्षेत्र में जागरूकता : अमृतसर सीमा क्षेत्र में सीमा सुरक्षा बल और स्थानीय ग्रामीणों ने मिलकर स्वच्छता अभियान चलाया। इस दौरान सीमा के आसपास सफाई की गई और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। यह अभियान 'स्वच्छ भारत' की भावना को सीमा तक पहुंचाने का उदाहरण है और नागरिक–सैनिक सहयोग को मजबूत करता है।

1 अप्रैल 2026– स्मार्ट फेंसिंग से सीमा सुरक्षा मजबूत, ड्रोन निगरानी बढ़ी : फाजिल्का बॉर्डर पर सुरक्षा को मजबूत करने के लिए स्मार्ट फेंसिंग, रडार और थर्मल कैमरे लगाए गए। सीमा सुरक्षा बल इन उपकरणों से ड्रोन गतिविधियों पर नजर रख रहा है। नई तकनीक से तस्करी और घुसपैठ के प्रयासों को पहले ही रोकना संभव हो रहा है, जिससे सीमा क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था अधिक प्रभावी बन रही है।

3 अप्रैल 2026– सीमा पर खेल प्रतियोगिता, जवानों और युवाओं ने बढ़ाया उत्साह : तरनतारन के सीमावर्ती क्षेत्र में खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें स्थानीय युवाओं और सुरक्षा बलों ने भाग लिया। कबड्डी और दौड़ जैसे खेलों ने आपसी संबंध मजबूत किए। सीमा सुरक्षा बल ने युवाओं को नशे से दूर रहने का संदेश भी दिया। यह पहल राष्ट्रीय एकता और स्वस्थ समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

5 अप्रैल 2026– ड्रोन से 64 किलो हेरोइन बरामद, तस्करी का बड़ा नेटवर्क उजागर : अमृतसर सीमा के पास सुरक्षा एजेंसियों ने 64 किलोग्राम हेरोइन बरामद की। जांच में सामने आया कि यह खेप ड्रोन के जरिए पाकिस्तान से भेजी गई थी। यह बरामदगी बताती है कि तस्करी का नेटवर्क संगठित और बड़े पैमाने पर सक्रिय है। सीमा क्षेत्र में नशा तस्करी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बनती जा रही है।

7 अप्रैल 2026– सीमावर्ती गांवों में देशभक्ति जागरूकता अभियान, नशा विरोधी संदेश : फाजिल्का सीमा के गांवों में प्रशासन और सुरक्षा बलों ने संयुक्त रूप से जागरूकता अभियान चलाया। लोगों को नशे से दूर रहने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने भी भाग लिया। यह अभियान सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बना।

10 अप्रैल 2026– ड्रोन गतिविधि के बाद हाई अलर्ट, संयुक्त तलाशी अभियान : पठानकोट के सीमा क्षेत्र में संदिग्ध ड्रोन देखे जाने के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने हाई अलर्ट जारी किया। सीमा सुरक्षा बल और पुलिस ने संयुक्त तलाशी अभियान चलाया। पूरे क्षेत्र में निगरानी बढ़ा दी गई। यह घटना दर्शाती है कि ड्रोन के जरिए तस्करी और निगरानी दोनों का खतरा लगातार बढ़ रहा है।

11 अप्रैल 2026– महिलाओं ने सैनिकों को राखी जैसे बंधन से जोड़ा, सम्मान कार्यक्रम आयोजित : पठानकोट सीमा क्षेत्र में स्थानीय महिलाओं ने सैनिकों के सम्मान में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। महिलाओं ने जवानों को तिलक लगाकर रक्षा का प्रतीकात्मक बंधन व्यक्त किया। यह आयोजन भारतीय संस्कृति में सैनिकों के प्रति सम्मान और भावनात्मक जुड़ाव को दर्शाता है। इससे सीमा पर तैनात जवानों का मनोबल भी बढ़ा।

12 अप्रैल 2026– सीमा के पास तस्करों की गिरफ्तारी, ड्रग्स और नकदी बरामद : फिरोजपुर सीमा क्षेत्र में पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने संयुक्त अभियान चलाकर तस्करी में शामिल कई लोगों को गिरफ्तार किया। आरोपियों के पास से ड्रग्स और बड़ी मात्रा में नकदी बरामद हुई। यह कार्रवाई बताती है कि सीमा के आसपास सक्रिय नेटवर्क को खत्म करने के लिए लगातार ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं।

14 अप्रैल 2026– बैसाखी पर्व पर सीमा क्षेत्र में उत्सव, जवानों और ग्रामीणों ने मिलकर मनाया त्योहार : अमृतसर–तरनतारन में बैसाखी के अवसर पर सीमा क्षेत्र में ग्रामीणों और सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने संयुक्त रूप से उत्सव मनाया। पारंपरिक नृत्य, गीत और सामूहिक कार्यक्रम आयोजित हुए। यह आयोजन भारतीय संस्कृति, कृषि परंपरा और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बना। इससे यह संदेश गया कि सीमा पर भी जीवन और संस्कृति की धारा निरंतर प्रवाहित रहती है।

15 अप्रैल 2026– एंटी-ड्रोन सिस्टम से कई घुसपैठ प्रयास नाकाम : अमृतसर–तरनतारन सीमा पर सीमा सुरक्षा बल ने एंटी–ड्रोन तकनीक से कई ड्रोन प्रयासों को विफल किया। अधिकारियों के अनुसार ड्रोन के जरिए नशा और हथियार भेजने की कोशिशें लगातार हो रही हैं। तकनीकी निगरानी के कारण इन प्रयासों को समय रहते रोकना संभव हो रहा है, जिससे सीमा सुरक्षा और मजबूत हुई है।

देशभर में सशक्त हो रही ज्ञान परंपरा की धारा

संकलन – डॉ. प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार, लेखिका व साहित्यकार एवं वैदिक दर्शन विशेषज्ञ

भारत की ज्ञान परंपरा सदियों से मानवता को सत्य, सदाचार और संतुलित जीवन का मार्ग दिखाती रही है। वर्तमान समय में भी देशभर में विविध आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक कार्यक्रमों के माध्यम से इस परंपरा को पुनः सशक्त करने का प्रयास निरंतर जारी है। प्रस्तुत हैं कुछ मुख्य समाचार

05 अप्रैल 2026 नागपुर (महाराष्ट्र) – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्वावधान में ''संस्कृति संवाद'' कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें युवाओं को भारतीय ज्ञान परंपरा, चरित्र निर्माण एवं राष्ट्रभावना पर मार्गदर्शन दिया गया।

07 अप्रैल 2026, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) – संस्कृति न्यास द्वारा वेद एवं उपनिषद आधारित संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें भारतीय दर्शन की गहराई पर विचार–विमर्श हुआ।

09 अप्रैल 2026 से 12 अप्रैल 2026, जौनपुर (उत्तर प्रदेश) आर्य समाज एवं भारतीय राष्ट्रवादी संस्था द्वारा विश्वशांति एवं राष्ट्र रक्षा हेतु पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ। जिसका उद्देश्य लोगों में वैदिक परंपरा एवं आध्यात्मिकता को जीवन में अपनाना तथा बच्चों को संस्कारित करना था।

12 अप्रैल 2026, नई दिल्ली – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित संगठनों द्वारा ''युवा संवाद'' कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर विचार रखे गए।

14 अप्रैल 2026, अहमदाबाद (गुजरात) – संस्कृति न्यास के सहयोग से भारतीय ग्रन्थों पर आधारित जीवनशैली पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई, जिसमें लोगों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही।

15 अप्रैल 2026, हरिद्वार (उत्तराखंड) – गंगा तट पर वैदिक यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें पर्यावरण संरक्षण एवं सांस्कृतिक जागरण का संदेश दिया गया।

यह स्पष्ट है कि ज्ञान और परंपरा के ये विविध आयाम केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के मार्गदर्शक हैं। ऐसे कार्यक्रम न केवल युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ते है, बल्कि उनमें नैतिकता, आत्मविश्वास और राष्ट्रभावना का संचार करते हैं। जब ज्ञान और संस्कार साथ चलते हैं, तभी एक सशक्त और जागरूक समाज का निर्माण संभव होता है।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति एवं युद्ध को लेकर हिंदुत्व का दृष्टिकोण

संकलन – डॉ. दीपा रानी (सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय)

हिंदुत्व मात्र धार्मिक अवधारणा नहीं है अपितु यह राष्ट्रीय सुरक्षा, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्वाभिमान और यथार्थवादी राजनीति का जीवंत दर्शन है। यह भारत की पहचान को संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक धर्म, आत्मरक्षा और राष्ट्रवाद से जोड़ता है। यह विश्व शांति के साथ, शक्ति संतुलन में विश्वास रखता है। हिंदुत्व किसी देश या राष्ट्र पर जोर जबरदस्ती या किसी के अधिकारों के हनन के लिए आक्रमण को साधन नहीं मानता बल्कि कर्त्तव्य पर आधारित न्यायपूर्ण, तर्क संगत युद्ध की अवधारणा को स्वीकार करता है। हिन्दुत्व का मानना है युद्ध केवल और केवल अन्याय, आत्मरक्षा, राष्ट्रहित, लोकहित से जुड़े पहलुओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। हिंदुत्व सदैव से ही अहिंसात्मक और संवेदनशील रहा है। यह युद्ध नहीं बुद्ध के मार्ग को अपनाने की बात पर विश्वास करता है। यह किसी भी विवाद या समस्या को युद्ध के जरिए नहीं बल्कि संवाद प्रक्रिया के दृष्टिकोण से समाधान को सुनिश्चित करने की बात करता है, लेकिन कभी भी बात अगर हिन्दुत्व के स्वाभिमान या प्रतिष्ठा की आई है तो भारत ने आत्मसमर्पण के बजाय संघर्ष और युद्ध के रास्ते को भी चुना। पूर्व परिणाम और इतिहास यह बताते हैं कि हिंदुत्व ऐसी परिस्थितियों में कई बार बिखरा, पर टूटा नहीं। इसीलिए आज भी हिन्दुत्व सभ्यता के उदाहरण, विश्व में आदर्श और अनुपालन के नजीर बने हुए हैं। आज जब आधी दुनिया युद्ध व संघर्षों से पीड़ित है तब विश्व के आम लोग हिंदुत्व व सनातन संस्कृति के मार्ग को अपनाने की राह पर अमल करने की ओर बढ़ रहे हैं। हिंदुत्व विचारधारा मानती है अहिंसा, आत्मरक्षा, आदर्शवाद तो जरूरी है पर राष्ट्रवाद सर्वोपरि है।

हिंदुत्व दर्शन में शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है चाहे वह, धार्मिक दृष्टि से हो या आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक दृष्टि से। अगर युद्ध की दृष्टि से आज के परिवेश पर नजर डालें तो साफ प्रतीत होता है कि मजबूत सैन्यशक्ति, कूटनीति, विदेश नीति अंतरराष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करती है। खाड़ी युद्ध से सीखने को मिल रहा है कि जब तक आप आर्थिक, सामरिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में खुद को मजबूत नहीं करेंगें तो कोई भी वाह्य शक्ति आपकी प्रगतिशीलता पर विराम लगा सकती है। आज भारत ने भी इस युद्ध से सीखा कि उसे ऊर्जा के क्षेत्र में अपने संवर्द्धन को बढ़ाकर आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ना चाहिये ताकि युद्ध की परिस्थितियों में देश के आम लोगों पर उसका सीधा असर न पड़े। आज भारत की विदेश नीति इस पर तेजी से काम कर रही है जिसका परिणाम यह है कि पिछले कई सप्ताह से चल रहे अमेरिका–इजराइल और ईरान युद्ध से आज भी हमारे देश में आयल की आपूर्ति पूर्णतः बाधित नहीं हुई है। आज हम कई जरूरी वस्तुओं का आयात और निर्यात भिन्न–भिन्न देशों के साथ कर रहे हैं। जो साफ संकेत देता है कि हमारी आत्मनिर्भरता किसी एक देश पर नहीं है। आज हम विश्व के साथ मिलकर नई तकनीकों के माध्यम से अपनी उत्पादकता बढ़ाकर स्वदेशी वस्तुओं का भारी मात्र में निर्यात कर रहे हैं। हाल के दिनों में भारत ने कई नए क्षेत्रों में उत्पादन के कार्य प्रारम्भ कर दिए हैं। सेमीकंडक्टर चिप और स्वदेशी हथियारों का उत्पादन इसके ताजा उदाहरण हैं।

अगर हम विश्व स्तर पर हिंदुत्व के योगदान की बात करें तो पाएंगे आज हिन्दुत्व का योगदान सीधे पारम्परिक युद्ध में नहीं बल्कि भारतीय पहचान को एक सैन्यवादी, राष्ट्रवादी ढांचे में ढालने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वैचारिक सहयोगियों के साथ गठबंधन बनाने में है जो वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति को प्रभावित करता है। आज हिंदुत्व विचारधारा देश के बाहर रह रहे प्रवासी भारतीयों को संगठित कर रही है। अमेरिका, यूके, कनाडा, मलेशिया, आयरलैंड आदि देशों में कई भारतीय मूल के लोग सक्रिय राजनीति में आकर भारत के हित में अपनी बातों को रखते हैं। अमेरिका और यूके में तो कई व्यावसायिक मुद्दों पर प्रवासी भारतीयों ने वहां की सरकारों पर कई बार भारत के हित के पक्ष में दबाव भी बनाया है और साथ ही भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय युद्धों में हिंदुत्व की भूमिका विस्तारवाद को लेकर नहीं बल्कि आत्मरक्षा, धर्मसंगत, तर्कसंगत, राष्ट्रहित और वैश्विक संतुलन पर केंद्रित है। इसका आंकलन वर्तमान में रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष में भारत की संतुलित नीति से समझ सकते हैं जिसमे हिन्दुत्व की सोच व्यावहारिक और प्रासंगिक दिखायी पड़ती है।

विकास और विरासत का संतुलन

दिल्ली-देहरादून हाईवे से बदलेगी पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तस्वीर

संकलन–डॉ नीलम कुमारी

हाल ही में राष्ट्र को समर्पित किया गया दिल्ली–देहरादून इकनॉमिक कॉरिडोर, देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के "प्रगति, प्रकृति और संस्कृति" के संतुलित दृष्टिकोण का सशक्त उदाहरण है। यह आधुनिक ग्रीनफील्ड हाई दिल्ली को देहरादून से जोड़ते हुए उत्तर प्रदेश, विशेषकर पश्चिमी क्षेत्र, के विकास को नई दिशा देने वाला है।

यह परियोजना केवल परिवहन सुविधा नहीं, बल्कि आर्थिक उन्नति का माध्यम है। मेरठ का खेल उद्योग, जो पहले ही देश–विदेश में प्रसिद्ध है, अब तेज परिवहन के कारण वैश्विक बाजारों तक अधिक सुलभता से पहुंच सकेगा। इसी प्रकार मुजफ्फरनगर का गन्ना और सहारनपुर का लकड़ी शिल्प उद्योग भी अपनी पहचान को व्यापक बना पाएंगे। इससे स्थानीय कारीगरों और किसानों की आय में वृद्धि होगी।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी इस परियोजना को विकास और विरासत के संतुलन का प्रतीक बताया है। वास्तव में, बेहतर कनेक्टिविटी जहां औद्योगिक और कृषि विकास को बढ़ावा देती है, वहीं यह क्षेत्रीय सांस्कृतिक धरोहरों को भी संरक्षित और प्रचारित करने में सहायक बनती है। पर्यटन को बढ़ावा मिलने से स्थानीय संस्कृति, हस्तशिल्प और परंपराओं को नई पहचान मिलेगी।

दिल्ली–देहरादून हाईवे उत्तर प्रदेश में विकास और विरासत संरक्षण के बीच एक सेतु का कार्य करता है। यह न केवल आर्थिक प्रगति को गति देता है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और पर्यावरणीय संतुलन को भी बनाए रखता है। यही संतुलन "नए भारत" की वास्तविक पहचान है।

लव जिहाद विश्लेषण

उत्तराखंड के ज्वालापुर कोतवाली क्षेत्र में 14 अप्रैल को लव जिहाद का एक मामला सामने आया जिसमें 21 वर्षीय एक मुस्लिम युवक शेख समीर ने 15 वर्ष की नाबालिग हिन्दू छात्रा के साथ सोशल मीडिया पर हिन्दू नाम मोनू रखकर दोस्ती की, फिर उसके साथ कई बार जबरन शारीरिक संबंध बनाए। कक्षा 10वीं में पढने वाली छात्रा की दो साल पहले इंस्टाग्राम पर मोनू से दोस्ती हुई। दोस्ती करने के बाद उस मुस्लिम युवक ने योजनानुसार बहला फुसलाकर प्यार और शादी का झांसा देकर छात्रा के साथ लगातार शारीरिक संबंध बनाए ,उसे ब्लैकमेल कर धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने लगा। जब छात्रा परेशान हो गई तो उसने अपने घरवालों को

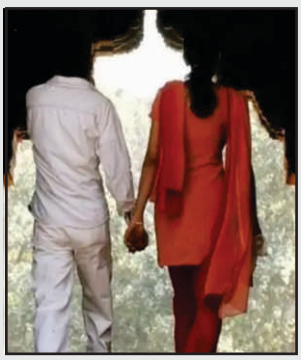

आपबीती बताई। घरवालों ने थाने में मुकदमा दर्ज कराया। ऐसी घटनाओं को देखकर स्पष्ट हो रहा है कि हिन्दू समाज की बेटियों और परिवार वालों को बहुत ही सतर्क रहने की जरुरत है। विशेष रूप से यह दायित्व परिवार वालों का बनता है कि वे अपने बच्चों की सोशल मीडिया की गतिविधियों पर नजर रखें, उन्हें समाज में घट रही ऐसी घटनाओं के बारे में बताएं और घर में अच्छे संस्कार भी दें। कुटुंब प्रबोधन अत्यंत आवश्यक है जिसके अभाव में ही हमारे बच्चे दिग्भ्रमित हो जाते हैं। इसके लिए हमारी स्वयं की सतर्कता और जागरूकता बहुत जरुरी है।

सोशल मीडिया में हिंदुत्व

संकलन – प्रकाश श्रीवास्तव

11 अप्रैल 2026 – अनंत अंबानी की पहल और गौ सेवा : अनंत सेवा की वर्षगांठ के अवसर पर देश भर की गौशालाओं में 'छप्पन भोग' और गौ सेवा से जुड़ी रील वायरल हुई, जिसमें हथिगांव (जयपुर) में हाथियों की देखभाल की पहल को भी सराहा गया।

#AnantSeva

11 अप्रैल 2026 – राम नवमी महोत्सव 2026 (आस्था और क्रिकेट का संगम) : राम नवमी के अवसर पर क्रिकेट दिग्गजों (विराट कोहली, सौरव गांगुली) की आस्था को दर्शाती पोस्ट्स, जिसमें 'जय श्री राम' के नारे और संस्कृति से जुड़ाव को ट्रेंड किया गया।

#RamNavami2026

12 अप्रैल 2026 – स्वामी विवेकानंद स्मारक का अमेरिका में अनावरण : सिएटल (यूएसए) में स्वामी विवेकानंद की पहली आदमकद कांस्य प्रतिमा का अनावरण, जिसे हिंदू धर्म के वैश्विक प्रभाव के रूप में सोशल मीडिया पर काफी साझा किया गया।

The Hindu News Report

1–5 अप्रैल 2026 – हिंदू नव वर्ष (विक्रम संवत) पर शोभा यात्राएं : चैत्र नवरात्रि और हिंदू नव वर्ष के स्वागत में निकाली गई शोभा यात्राओं की तस्वीरों और वीडियोज का ट्रेंड, जो सांस्कृतिक पुनर्जागरण का समर्थन करते हैं।

#HinduNavVarsh

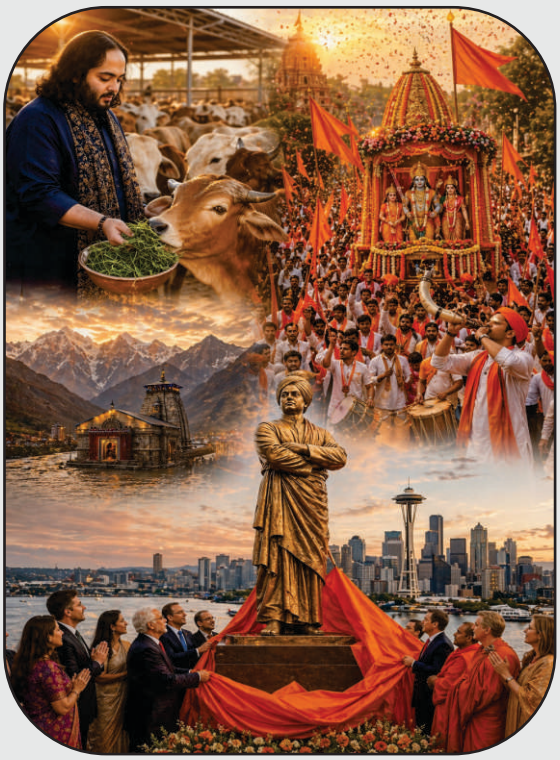

12 अप्रैल 2026 – वायरल पुजारी वीडियो (जयपुर रेलवे स्टेशन) : जयपुर रेलवे स्टेशन पर एक हिंदू पुजारी द्वारा दैनिक पूजा अनुष्ठान करने का वायरल वीडियो, जिसे सार्वजनिक स्थान पर आस्था व्यक्त करने के रूप में समर्थन मिला।

#ViralPoojaVideo

10 अप्रैल 2026 – सनातन धर्म और एकादशी फास्ट 2026 : एकादशी व्रत के आध्यात्मिक महत्व और हिंदू त्योहारों को आध्यात्मिक जीवन शैली के रूप में बढ़ावा देने वाली पोस्ट्स।

@LifewithKrishna

एन सी आर के समाचार

संकलन– नन्द किशोर शर्मा, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली शिक्षा विभाग

राष्ट्रपति- प्रधानमंत्री ने की स्वगणना

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उपराष्ट्रपति सी पी राधाकृष्णन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बुधवार को जनगणना 2027 के लिए अपना स्वगणना कार्य पूरा कर लिया। इसके साथ ही भारत की पहली पूरी तरह डिजिटल जनगणना के पहले चरण की शुरुआत हो गई। इस प्रक्रिया में इन सभी लोगों ने अपने–अपने आवास संबंधी जानकारियां दर्ज कराई। राष्ट्रपति भवन ने 'एक्स' पर बताया कि मुर्मु ने वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में पोर्टल पर अपने परिवार का विवरण स्वयं दर्ज कराया। इसके साथ ही 15 दिनों की स्वगणना अवधि शुरू हुई, जिसमें नागरिक वेब पोर्टल पर खुद ही जानकारी प्रदान करने का विकल्प चुन सकते हैं।

इस अवसर पर गृहमंत्री अमित शाह ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा 'भारत की विकास यात्रा को गति देने और प्रत्येक देशवासी तक सरकार की योजनाओं का समुचित लाभ पहुंचाने में इस प्रक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।'

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट उड़ान के लिए तैयार

ग्रेटर नोएडा – नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का प्रथम चरण के तहत निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। एयरपोर्ट उड़ान के लिए तैयार है। साथ ही सभी नियामकीय मंजूरी मिल चुकी हैं। सोमवार को टाटा प्रोजेक्ट ने यह जानकारी दी। नोएडा एयरपोर्ट का निर्माण कार्य इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण (ईपीसी) मोड पर टाटा प्रोजेक्ट्स ने पूरा किया है। कंपनी ने कहा कि नियामकीय स्वीकृतियां मिलने के साथ ही नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा अब वाणिज्यिक संचालन के लिए तैयार है। कंपनी ने बताया कि ज्यूरिख एयरपोर्ट इंटरनेशनल ए जी की स्वामित्व वाली कंपनी यापल द्वारा विकसित एयरपोर्ट से दिल्ली– एनसीआर में विमानन क्षमता को मजबूती मिलने के साथ–साथ पूरे क्षेत्र में आर्थिक वृद्धि, लॉजिस्टिक्स विकास, पर्यटन और शहरी विस्तार को गति मिलने की उम्मीद है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम से महिलाएं बनेंगी सशक्त - मौर्य

नोएडा – उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने गुरुवार को इंडोर स्टेडियम में कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए ऐतिहासिक कदम है। यह केवल 33 प्रतिशत आरक्षण का विषय नहीं, बल्कि महिलाओं को नेतृत्व, निर्णय क्षमता और राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका देने का संकल्प है। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने यह बातें नारी शक्ति वंदन अधिनियम के समर्थन में आयोजित नारी शक्ति वंदन टाउन हॉल कार्यक्रम में कहीं। उन्होंने कहा कि यह अधिनियम भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में एक मील का पत्थर है। दशकों से लंबित इस मांग को पूरा कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की आधी आबादी को उनका अधिकार दिलाने का कार्य किया है। अधिनियम सशक्त नारी, सशक्त भारत के मूल मंत्र को साकार करने के साथ ही महिलाओं को नई ऊर्जा और अवसर प्रदान करेगा।

बाहर से आए लोगों ने श्रमिकों के बीच पहुंचकर सुलगाया नोएडा शहर

नोएडा में पिछले दिनों वेतन वृद्धि सहित अन्य मांगों को लेकर श्रमिकों का आंदोलन हिंसक हो गया। फेस–2 थाना क्षेत्र से शुरू हुई हिंसा नोएडा के कई इलाकों और ग्रेटर नोएडा के सूरजपुर, ईकोटेक और कुलेसरा तक पहुंच गई। पुलिस की जांच में सामने आया है कि साजिश रच कर सोशल मीडिया के जरिए अफवाह फैलाई गई, जिससे आंदोलन हिंसक हुआ। पुलिस के अनुसार जिन 62 लोगों को गिरफ्तार किया गया है, उनमें से 42 ऐसे हैं जो श्रमिक नहीं है। हिंसा भड़काने के लिए उत्तर प्रदेश के अन्य जिलों के अलावा पश्चिम बंगाल और बिहार से भी लोग आए, इनमें कुछ महिलाएं भी शामिल थी। पुलिस के अनुसार बाहर से आए लोगों द्वारा औद्योगिक ढांचे को नुकसान पहुंचाने की साजिश रची गई थी। पुलिस कमिश्नर ने कहा कि अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाएगी।

भारत विकास परिषद एक परिचय

प्रस्तावना - दिल्ली में लाला हंसराज गुप्ता, डॉ. सूरज प्रकाश जी जैसे दिल्ली के अनेक संभ्रांत नागरिकों द्वारा भारत विकास परिषद की संकल्पना 12 जनवरी 1963 में पूज्य स्वामी विवेकानंद जी के जन्मदिवस पर आयोजित बैठक में की गई थी। जुलाई 1963 को इसका पंजीयन एक सोसाइटीज के रूप में करने हेतु दिल्ली के होटल मदीना में इसकी प्रथम बैठक आयोजित की गई। इसके प्रथम संरक्षक का दायित्व सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश व प्रसिद्ध विचारक श्री वी. पी. सिंह को सौंपा गया। इसके प्रथम महासचिव डॉ. सूरज प्रकाश तथा प्रथम अध्यक्ष लाला हंसराज गुप्ता बने। परिषद का ध्येय वाक्य है– स्वस्थ, समर्थ व संस्कारित भारत का निर्माण।

परिषद का संगठनात्मक स्वरूप : भारत विकास परिषद वर्तमान में एक राष्ट्रव्यापी संगठन है। जिसकी प्रत्येक राज्य में शाखाएं हैं, लगभग 1600 शाखाएं व 85000 सदस्यों के माध्यम से परिषद राष्ट्र की सेवा में संलग्न है। परिषद की सदस्यता पारिवारिक है, पति–पत्नी में से सदस्यता ग्रहण करने वाला प्रथम सदस्य प्राथमिक सदस्य तथा दूसरा एसोसिएट। प्राथमिक सदस्य ही परिषद की सभी प्रबंध समितियां में भाग लेता है, दोनों ही संकलन – प्रकाशवीर, पूर्व प्रधानाचार्य, शिशुमंदिर सदस्य परिवर्तनशील हैं। परिषद के सदस्यों द्वारा स्थाई प्रकल्पों के माध्यम से समाज की सेवा हेतु लगभग 95 ट्रस्ट व सोसाइटीज की स्थापना की गई है, जो भारत विकास परिषद की एफिलिएटिड बोर्डिंग के रूप में कार्यरत हैं।

परिषद के प्रमुख कार्य : परिषद द्वारा संपर्क, सहयोग, सेवा, संस्कार तथा समर्पण के पंच सूत्रों पर आधारित अनेक सेवा व संस्कार के विभिन्न प्रकल्पों पर कार्य होता है। परिषद द्वारा संस्कार व संवेदना युक्त सेवा प्रकल्पों पर अत्यधिक जोर दिया जाता है। राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता, भारत जानो प्रतियोगिता, गुरु वंदन – राष्ट्र अभिनंदन, एनीमिया मुक्त भारत, बेटी पढ़ाओ–बेटी बचाओ जैसे अनेक प्रकल्पों के माध्यम से परिषद ने समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ा है।

संक्षेप में भारत विकास परिषद सुसंस्कृत, संभ्रांत, बुद्धिजीवी एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों का यह राष्ट्रव्यापी संगठन पिछले 63 वर्षों से सेवा व संस्कार के विविध क्षेत्रों में एक प्रगतिशील संगठन के रूप में कार्य करते हुए प्राकृतिक आपदाओं व राष्ट्रीय चुनौतियों के समय में भी राष्ट्र सेवा में सदैव तत्पर रहा है।

पूर्व छात्र परिषद

प्रस्तावना - 1952 में सरस्वती शिशु मंदिर योजना के प्रारंभ होने से विद्या भारती द्वारा संचालित अनेक विद्यालय चल रहे हैं। इन विद्यालयों से शिक्षित छात्र बड़ी संख्या में समाज में प्रतिष्ठित हैं। इन सभी पूर्व छात्रों से संपर्क बना रहे इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद की स्थापना की गई। पूर्व छात्र परिषद विद्यालय स्तर से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक सक्रिय है। जिसकी विद्यालय से लेकर जिला, प्रांत, क्षेत्र व अखिल भारतीय स्तर तक कार्य को गतिमान बनाए रखने के लिए प्रत्येक स्तर पर संयोजक, सह संयोजक तथा समस्त कार्यकारिणी गठित है। विद्या भारती पूर्व छात्र परिषद विश्व में पूर्व छात्रों का सबसे अग्रणी संगठन है। वर्तमान में लगभग 10.63 लाख पूर्व छात्र परिषद के पोर्टल पर स्वयं का पंजीकरण कर चुके हैं। एक अनुमान के अनुसार अभी तक 50 लाख छात्र विद्या भारती के विभिन्न शिक्षण संस्थानों से शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं। इस प्रकार यह समझा जा सकता है कि भविष्य में पूर्व छात्र परिषद के संख्याबल वृद्धि एवं सेवा प्रकल्पों के विस्तार की असीम संभावनाएं विद्यमान हैं। पूर्व छात्र एल्यूमिनी पोर्टल पर पंजीकरण कराने के लिए वेबसाइट https://www.vidyabharatialumni.org/ है।

उद्देश्य - समाज एवं राष्ट्र निर्माण के निमित्त स्वतः स्फूर्त सेवा भाव से कार्य करने वाले गुणवान, चरित्रवान, आत्मनिर्भर पूर्व छात्रों को एक मंच पर लाकर साथ मिलकर सेवा कार्य करना, पूर्व छात्र परिषद से जुड़ने के कारण पूर्व छात्रों में उनके संस्कारों का पुनर्जागरण होता है तथा विद्या भारती के अनेक सेवा प्रकल्पों में उनकी व्यक्तिगत तथा आर्थिक रूप से सक्रिय सहभागिता रहती है।

पूर्व छात्र परिषद का कार्य विस्तार - वर्तमान में पूर्व छात्र परिषद द्वारा विशेष रूप से निम्न प्रकार के कार्यों में सहभागिता रहती है।

♦ पूर्व छात्र 'परिषद' के माध्यम से समाज के लिए निःशुल्क चिकित्सा कैंप, रक्तदान शिविर, शीतल पेयजल की व्यवस्था आदि कार्य कर रहे हैं। ♦ पूर्व छात्रों द्वारा विद्या भारती के विद्यालयों के लिए भवन निर्माण, स्मार्ट बोर्ड, तथा तकनीकी सहयोग के साथ–साथ उसके प्रबंधन में सहयोग करना। ♦ पूर्व छात्र अपने विद्यालयों के निर्धन छात्रों की शुल्क प्रतिपूर्ति, निःशुल्क ड्रेस व पुस्तक वितरण तथा उनके करियर काउंसिलिंग आदि का कार्य कर रहे हैं। ♦ समाज में ऐसे सभी कार्य जो समाज को सुदृढ़ बनाते हैं, जैसे– स्वास्थ्य, संस्कृति, समरसता एवं शिक्षण – प्रशिक्षण आदि कार्यों में पूर्व छात्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रहती है।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पूर्व छात्र परिषद की सभी इकाइयां सक्रिय होकर कार्य कर रही हैं।

–डेस्क

अपने धर्म और समाज–संस्कृति का रक्षण करना यह संघ का ध्येय है। कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि स्वधर्म की रक्षा करना यानी परधर्म का द्वेष करना है । परंतु परधर्म का द्वेष करने से स्वधर्म का रक्षण कैसे हो सकेगा, यह मेरी समझ में नहीं आता। संघ की कार्य पद्धति में पंथ, उप–पंथ, जातीय मतभेद, इत्यादि प्रश्न उपस्थित नहीं हो सकते। संघ एकता की भावना से संपूर्ण हिंदू समाज का विचार करता है।

– डॉ. केशवराव हेडगेवार (डॉ. हेडगेवार – एक अनोखा नेतृत्व / 53)

हमारे वनवासी भाई बहन, जो पहाड़ियों तथा जंगलों में रहते हैं, अत्यंत दुख की स्थिति में हैं। वास्तव में, यह हमारा तथाकथित उच्च जाति समाज ही है, जो उनकी वर्तमान दुखदाई दशा के लिए जिम्मेदार है। लंबे समय तक यह वनवासी घोर अन्याय को सहते आए हैं। क्योंकि वह भी हमारे समाज के अभिन्न अंग हैं, हमें हर संभव प्रयत्न द्वारा उनकी सहायता करनी चाहिए और इस प्रकार अपने पुराने पापों का प्रायश्चित करना चाहिए। – श्री गुरुजी (5 सरसंघचालक, अरुण आनंद, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2020, पृष्ठ– 100)

हमें यह मानना ही पड़ेगा कि छुआछूत एक बड़ा अभिशाप है तथा हमें इसे दूर करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। अगर छुआछूत गलत नहीं है तो फिर कुछ भी गलत नहीं है। छुआछूत एक अभिशाप है। इसे यहां से पूरी तरह जाना होगा।'

–बाला साहब देवरस (अपनी माता से निवेदन)

(5 सरसंघचालक, अरुण आनंद, प्रभात प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2020, पृष्ठ– 121)

सभी व्यक्ति मूलतः अच्छे होते हैं। अच्छा मानकर हर व्यक्ति से व्यवहार करना चाहिए। क्रोध, क्षोभ, ईर्ष्या आदि के कारण उसके व्यव्यहार में परिवर्तन तात्कालिक कारकों का परिणाम होता है। मूलतः व्यक्ति अच्छा है और मूलतः प्रत्येक व्यक्ति विश्वसनीय है। हमें यह मानकर ही चलना चाहिए। – रज्जू भैय्या (प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह की जीवन यात्रा, रतन शारदा, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–195)

सब प्रकार के आक्रमणों से रक्षा के लिए एकमात्र उपाय है अपने इस राष्ट्रीय समाज में प्रबल स्वाभिमान जगाकर उसे बल–संपन्न सामर्थ्य–संपन्न बनाना और इस भाव को पुष्ट करना कि हम अपने विकास के लिए मंत्र स्वदेशी, तंत्र स्वदेशी, भाव स्वदेशी का अवलंबन करेंगे। एक युगानुकूल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था का विकास करना है, जो व्यक्ति–समाज–प्रकृति और परमात्मा के बीच योग्य सामंजस्य बनाए रखते हुए मनुष्य को शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का सुख प्रदान करा सके। इसी को हमारे यहाँ धर्म कहा गया है। – कु.सी. सुदर्शन (हमारे सुदर्शन जी, सं. बल्देव भाई शर्मा, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2017, पृष्ठ 206)

अपने घर में सप्ताह में एक दिन तय करके सब एक साथ भजन करें, साथ में घर पर बना भोजन करें। अपनी कुल परम्परा, आपस के सुख दुःख की चर्चा करें। हम कौन हैं?, देश की स्थिति परिस्थिति पर चर्चा करें। महान आदर्शों पर चर्चा करना, उन्हें जीवन में कैसे अपनाएं, इस पर चर्चा कर प्रेरित करना। यही कुटुंब प्रबोधन है।

– डॉ. मोहन भागवत

क्या महिलाओं को अभी भी संघर्ष करना होगा?

- गुंजन नंदा, समाज सेविका

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में नारी को सदैव शक्ति, सृजन और संस्कार का प्रतीक माना गया है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' का आदर्श हमारे समाज की आत्मा में बसता है। फिर भी, वास्तविकता यह है कि महिलाओं को आज भी अपने सम्मान और समान सहभागिता के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 को एक ऐतिहासिक कदम माना गया, जिसका उद्देश्य संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करना है। यह कानून वर्षों की लंबी प्रतीक्षा और संघर्ष का परिणाम है। लेकिन दुखद सत्य यह है कि यह अधिनियम अभी तक जमीनी स्तर पर लागू नहीं हो पाया है।

इसका मुख्य कारण विपक्ष का महिलाओं के प्रति विरोधात्मक रवैया है जो यह कहता है कि कानून को लागू करने के लिए जनगणना और परिसीमन जैसी प्रक्रियाएं पूरी होना आवश्यक हैं, जो अभी लंबित हैं। परिणामस्वरूप, महिलाओं को जो अधिकार मिला है, वह फिलहाल केवल कागजों तक सीमित है। यह स्थिति एक गंभीर प्रश्न खड़ा करती है–कि क्या महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए अभी भी संघर्ष करना होगा?

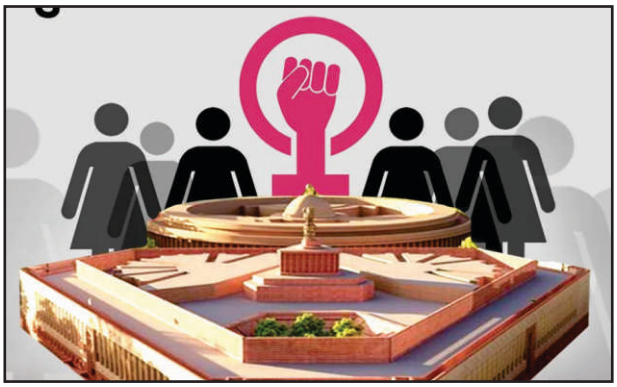

सत्तापक्ष से अधिनियम पारित होने के समय महत्वपूर्ण सुझाव यह भी आया था कि महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए अतिरिक्त सीटें (extra seats) बढ़ाई जाएं, ताकि वर्तमान प्रतिनिधियों की सीटों पर प्रभाव ना पड़े।

जब इस विकल्प पर सहमति की बात सामने आई, तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि– 'जब समाधान उपलब्ध था, तो प्रतीक्षा क्यों?' यह प्रश्न आज केवल राजनीति का नहीं, बल्कि महिलाओं के अधिकारों और उनके भविष्य का है। यह कहना उचित होगा कि यह मुद्दा केवल पक्ष या विपक्ष का नहीं, बल्कि नीति, प्रक्रिया और राजनीतिक प्राथमिकताओं के बीच संतुलन का है। लेकिन अंततः, इसका असर सीधे देश की आधी आबादी (महिलाओं) पर पड़ता है।

"अधिकार समानता के दिए नहीं जाते, उन्हें प्राप्त करना पड़ता है, इक्कीसवी सदी की नारी अब यह बात भली–भांति जान चुकी है।"

आज की महिला शिक्षित है, आत्मनिर्भर है और अपने अधिकारों के प्रति सजग भी। वह केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं, बल्कि हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। फिर भी, निर्णय लेने वाले मंचों जैसे संसद और विधान सभाओं में उसकी भागीदारी अभी भी सीमित है।

यह आवश्यक है कि महिलाएं केवल अधिकार मिलने का इंतजार न करें, बल्कि सामूहिक आवाज बनाकर लक्ष्य तक पहुचने के लिए प्रयासरत रहे। यह समय की मांग है और सोच युगानुकुल है।

अंततः, यह कहना उचित होगा कि नारी शक्ति वंदन केवल एक कानून नहीं, बल्कि एक संकल्प है– समानता, सम्मान और सशक्तिकरण का। अब समय आ गया है कि यह संकल्प केवल शब्दों में नहीं, बल्कि वास्तविकता में परिवर्तित हो और इसके लिए महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहकर, निरंतर प्रयास और संघर्ष करना होगा। इस अधिनियम को शीघ्र लागू करने की दिशा में ठोस कदम उठाएं। क्योंकि जब तक महिलाएं नीति निर्माण में समान रूप से भागीदार नहीं होंगी, तब तक सच्चे अर्थों में लोकतंत्र अधूरा रहेगा।

सभी देशों में जहां महिला की भूमिका नहीं है। उन सभी क्षेत्रों में उनकी भूमिका बने इस बारे में सोचना हिन्दू चिंतन के अनुरूप ही है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने स्त्री शिक्षा को लेकर बहुत बड़े प्रयास प्रारंभ किये। हम देखेंगे की पूरे स्वाधीनता संघर्ष में हमारे यहां महिलाओं की बड़ी भागीदारी रही। संविधान सभा में महिलाओं के मतदान का अधिकार तो प्राप्त हो गया किन्तु संसद में कुछ दलों (कांग्रेस, सपा, TMC, DMK) के विरोध के कारण बिल गिर गया।

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि हमने प्रमुख रूप से दो पाप किये है – महिलाओं की उपेक्षा और जनसामान्य की उपेक्षा।

महिलाओं के बारे में चर्चा करते हुए स्वामी विवेकानंद जी कहते है कि उसे किसी की कृपा की आवश्यकता नहीं है। वह स्वयं जगत जननी है, उसे अवसर चाहिए। आप अवसर दीजिये वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माण करेगी। नारी शक्ति वंदन कानून इस दिशा में बहुत बड़ा और साहसिक कदम है। जिसका विपक्ष ने उपेक्षा, विरोध एवं महिलाओं का अपमान किया है। देश के प्रधान सेवक ने राष्ट्र के संबोधन में जो बात कही है, देशभर की महिलाओं में एक आशा एवं विश्वास की उम्मीद एवं किरण जगी है। उन्होंने कहा है कि हर रूकावट को हटाना है, हिम्मत अटूट है, इरादा अडिग है, इस संकल्प को पूरा करना है।

चित्रकूट का परिवार लौटा पुरखों की ओर

–डेस्क

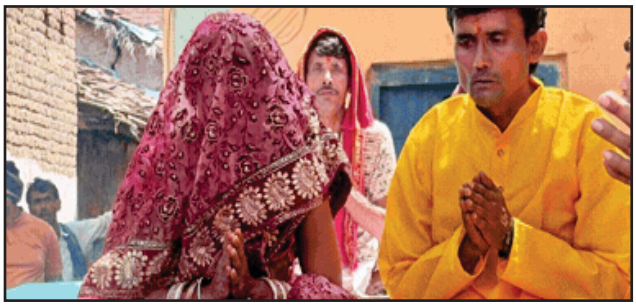

चित्रकूट के एक मुस्लिम परिवार ने वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच सनातन में वापसी की। पहाड़ी क्षेत्र के दरसेंडा गांव के मनेंद्र सिंह ने अपने परिवार सहित खुद को हिंदू घोषित किया और अपने पुरखों की सनातन परम्परा में लौटे। इस दौरान उनकी पत्नी शबनम ने अपना नाम सपना सिंह रखा। मनेंद्र ने बताया कि उनके दादा शहजाद सिंह ने मुस्लिम युवती से विवाह के बाद इस्लाम धर्म अपना लिया था। उसने भी मुस्लिम युवती शबनम से विवाह किया था, लेकिन मनेन्द्र स्वयं कभी नमाज अदा करने नहीं गए और अपने तीनों बच्चों के नाम सोनम, सुहानी और आयुष सिंह रखे। उसके चाचा, दादा समेत भाइयों का ज्यादातर परिवार मुस्लिम धर्म अपनाए हुए हैं। मनेंद्र ने बताया कि वह लंबे समय से अपने पुरखों के हिंदू धर्म में वापसी का मन बना चुके थे। शांतिकुंज हरिद्वार, गायत्री शक्तिपीठ चित्रकूट और बड़ा मठ के साधु–संतों द्वारा हवन–पूजन और यज्ञोपवीत संस्कार कराने के बाद उनके पूरे परिवार ने हिन्दू धर्म अपना लिया।

एआई

युद्ध में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस : नई तकनीक नई रणनीति

– आर्या कुमारी, छात्रा, आईएमएस, गाजियाबाद

21वी सदी की युद्ध रणनीति, सैन्य बल और हथियारों से कम डेटा प्रोपेगैंडा के आधार पर अधिक निर्भर होती हुई नजर आ रही है। पश्चिम एशिया में चल रहे वर्तमान वैश्विक संघर्ष में ए.आई अपनी भूमिका कुशल तौर पर हर चरण में निभा रहा है। प्रोजेक्ट मेवेन जैसे प्रोग्राम में ए.आई का प्रयोग अमेरिकी सेनाओं द्वारा ईरान के खिलाफ सटीक डेटा एवं ड्रोन विडियोज विश्लेषण में किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य दुश्मन के सैन्य ठिकानों का सटीक पहचान, गतिविधियों को ट्रैक करना, संदिग्ध जानकारी प्राप्त कर तुरंत टार्गेट की पहचान कर हमला करने का सुझाव सेना को देना होता है। ए.आई टूल्स की मदद से अमेरिका ने अपने हजारों टार्गेटस पर संभवत जीत पाई है।

इजराइल की खुफिया एजेंसी Mossad (मोसाद) नें भी अपनें एडवांस ए.आई तकनीकों का इस्तेमाल कर कई हाई प्रोफाईल टार्गेटस को घेरे में लिया। मोसाद एजेंसी अब ए.आई के प्रभावशाली टूल्स का प्रयोग दुश्मन की पहचान से लेकर उन्के मोमेंटस को लोकेट कर, ए.आई संचालित "kill chain" तेजी से उत्पन्न करती है। रिपोर्टस के अनुसार ए.आई "kill chain" की प्रक्रिया दुश्मनों का समापन केवल कुछ ही सेकेंड में टार्गेटस की पहचान कर सटीक रुप से कर देता है।

वहीं ईरान द्वारा विकसित शाहेद ड्रोन्स जो की कम लागत में

(2000–2500) कीमी रेंज से प्रभाव डालता है। ये ड्रोन 185 किमी/घंटा की स्पीड से स्वार्म अटैक करता है। स्वार्म अटैक एक ऐसे सेन्य रणनीति को दर्शाता है जिसमें छोटे–छोटे हथियार एक झुंड बनाकर हमला करते है, इसे हम सुसाइड ड्रोन भी कहते हैं। ईरान बड़ी संख्या में अपनें ए.आई आधारित तकनीकों जैसे थर्मल इमेजिंग, स्मार्ट गाइडेंस मिसाइल का उपयोग कर दुश्मनों के गतिशील लक्ष्यों को भी भेदने में सक्षम रहा है। तकनीक के इस सफर में ए.आई की दुनिया अब हमारा भविष्य नहीं रहा बल्कि वर्तमान की आवश्यकता बन गया है। ए.आई के जरिये साइबर सुरक्षा की प्राथमिकता पर अधिक जोर दिया जा रहा है जिसके माध्यम से युद्ध की गतिविधियों को नियंत्रित करना काफी आसान होता जा रहा है।

डिजिटल समाचार

संकलन – विनोद कुमार

यूपीआई बना डिजिटल अर्थव्यवस्था की रीढ़, हर माह ₹ 230 लाख करोड से अधिक लेन-देन

देश में डिजिटल भुगतान का दायरा तेजी से बढ़ रहा है। National Payments Corporation of India के आंकड़ों के अनुसार 2025–26 में यूपीआई के माध्यम से प्रति माह ₹ 230 लाख करोड़ से अधिक लेन–देन दर्ज किए गए। छोटे व्यापारियों और ग्रामीण बाजारों में क्यूआर कोड भुगतान के बढ़ते उपयोग ने नकदी पर निर्भरता घटाई है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह बदलाव भारत को डिजिटल आत्मनिर्भरता की ओर मजबूत आधार प्रदान कर रहा है।

डिजिटल इंडिया से 90 प्रतिशत सेवाएं ऑनलाइन, पारदर्शिता में उल्लेखनीय सुधार

Digital India अभियान के तहत सरकारी सेवाओं का व्यापक डिजिटलीकरण हुआ है। सरकारी रिपोर्टों के अनुसार केंद्र और राज्य स्तर की 90 प्रतिशत से अधिक सेवाएं अब ऑनलाइन उपलब्ध हैं। DigiLocker में 6 अरब से अधिक दस्तावेज जारी किए जा चुके हैं। इससे सेवा वितरण में तेजी आई है और भ्रष्टाचार में कमी दर्ज की गई है। प्रशासनिक विशेषज्ञ इसे आत्मनिर्भर शासन की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि मान रहे हैं।

भारत बना दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप ईकोसिस्टम

Startup India के तहत भारत वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब बन चुका है। Department for Promotion of Industry and Internal Trade के अनुसार 2025 तक देश में 1.2 लाख से अधिक स्टार्टअप्स को मान्यता दी जा चुकी है। इनमें से कई यूनिकॉर्न कंपनियां भी शामिल हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार ने रोजगार और नवाचार को बढ़ावा दिया है, जिससे आर्थिक आत्मनिर्भरता को गति मिली है।

SWAYAM और DIKSHA से करोड़ों छात्रों को डिजिटल शिक्षा का लाभ

डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। SWAYAM पर 3 करोड़ से अधिक नामांकन दर्ज किए गए हैं, जबकि DIKSHA ऐप को 15 करोड़ से अधिक बार उपयोग किया जा चुका है। शिक्षा मंत्रालय के अनुसार इन प्लेटफॉर्म्स ने ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचाई है। इससे युवाओं में कौशल विकास बढ़ा है। साथ ही वे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में नवाचार

–डेस्क

उत्तर प्रदेश को देश का अग्रणी 'स्टार्टअप प्रदेश' बनाने की दिशा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक और निर्णायक कदम उठाया है। बजट 2026–27 में प्रदेश की तकनीकी और आर्थिक तस्वीर बदलने के लिए लखनऊ और गौतमबुद्ध नगर में 'यू–हब' (U-Hub) की स्थापना का ऐलान किया गया है। 100 करोड़ रुपये के शुरुआती निवेश के साथ बनने वाले ये केंद्र राज्य के युवाओं के लिए न केवल रोजगार के द्वार खोलेंगे, बल्कि उत्तर प्रदेश को ग्लोबल इनोवेशन मैप पर मजबूती से स्थापित करेंगे। योगी सरकार की यह महत्वाकांक्षी योजना तेलंगाना, ओडिशा और कर्नाटक जैसे राज्यों के सफल नवाचार केंद्रों से प्रेरित है। यू–हब का मूल उद्देश्य राज्य के मेधावी युवाओं के 'आइडिया' को सफल 'बिजनेस मॉडल' में तब्दील करना है। यहां स्टार्टअप्स को एक ही छत के नीचे विश्वस्तरीय संसाधन, तकनीकी मार्गदर्शन और अनुभवी विशेषज्ञों की मेंटोरशिप उपलब्ध कराई जाएगी। सरकार का विजन स्पष्ट है– यूपी का युवा अब नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला बनेगा।

उत्तर प्रदेश में युवाओं ने उन्नत ड्रोन तकनीक विकसित कर नई पहचान बनाई है। लखनऊ के स्टार्टअप का ड्रोन लंबी रेंज, एआई सिस्टम और कम लागत के साथ तैयार हुआ है। यह निगरानी और हमले दोनों में सक्षम है, जिससे राज्य डिफेंस और तकनीकी क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। लखनऊ स्थित एक प्राइवेट स्टार्टअप ने अत्याधुनिक ड्रोन तकनीक विकसित की है, जो न केवल प्रदेश के लिए बल्कि देश की रक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। हॉवरिट कंपनी ने "दिव्यास्त्र एमके–1" नामक एडवांस यूएवी ड्रोन तैयार किया है, जो आधुनिक युद्ध की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए निगरानी के साथ–साथ सटीक हमले करने में सक्षम है। इस ड्रोन की प्रमुख खासियत इसकी 500 किलोमीटर की रेंज, लगभग 5 घंटे की उड़ान क्षमता और एआई आधारित टारगेटिंग सिस्टम है। यह 10,000 फीट तक उड़ सकता है और 15 किलोग्राम तक पेलोड लेकर सटीक निशाना साध सकता है। इसके अलावा, इसकी लागत भी अन्य ड्रोन की तुलना में काफी सस्ती बताई जा रही है।

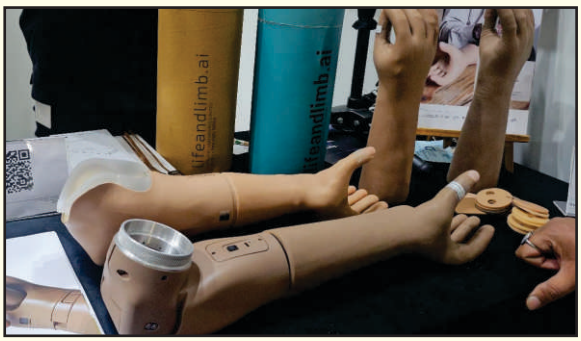

आईआईटी कानपुर के एक स्टार्टअप ने ऐसा कृत्रिम हाथ तैयार किया है, जो दिव्यांगजनों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। यह हाथ न सिर्फ दिखने में असली जैसा है, बल्कि काम करने में भी काफी हद तक सामान्य हाथ जैसा अनुभव देता है। आईआईटी कानपुर के इंक्यूबेशन एंड इनोवेशन सेंटर में विकसित इस खास प्रोजेक्ट को लाइफ एंड लिम्ब नाम के स्टार्टअप ने तैयार किया है। इस कृत्रिम हाथ के दो अलग–अलग वर्जन बनाए गए हैं, ताकि जरूरत के हिसाब से लोग अपना विकल्प चुन सकें। इस कृत्रिम हाथ की सबसे बड़ी खासियत इसमें इस्तेमाल की गई आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस तकनीक है जो उपयोगकर्ता की जरूरतों को समझकर उसी हिसाब से काम करने में सक्षम है। यानी पकड़ना, घुमाना या छोटे–छोटे काम करना ये सभी काम अब पहले से ज्यादा आसान हो जाएंगे। 65000 रुपये की किफायती कीमत में उपलब्ध यह हाथ एक चार्जेबल डिवाइस की तरह काम करता है, जिससे इसे बार–बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

05 मई 1911, जयंती प्रीतिलता वाद्देदार

क्रांतिकारी प्रीतिलता वाद्देदार, बंगाल के प्रसिद्ध क्रांतिकारी मास्टर सूर्यसेन के क्रांतिकारी दल की प्रमुख सदस्य थीं। उन्होंने चिटगाँव स्थित शस्त्रागार में 18 अप्रैल 1930 की क्रांतिकारी घटना के दौरान सफलतापूर्वक टेलीफोन लाइनों, टेलीग्राफ कार्यालय को नष्ट कर दिया था। 23 सितंबर 1932 को उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों का वध करने की योजना में अपने साथियों का सहयोग किया था। उन्होंने एक क्लब में बम विस्फोट करके अनेक अंग्रेजों को चोटिल कर दिया था। 21 वर्ष की प्रीतिलता को अंग्रेजों की गोली लग गई थी, उन्होंने अंग्रेजों के हाथ जीवित लगने के स्थान पर पोटेशियम साईनाइड खाकर अपने जीवन की आहुति दे दी। उनके बलिदान ने अनेक युवाओं को अंग्रेजों से मातृभूमि की मुक्ति के लिए प्रेरित किया।

–डेस्क

22 मई 1917, जयंती सुनीति चौधरी

सुनीति चौधरी भारत के स्वतंत्रता संग्राम की एक साहसी महिला क्रान्तिकारी थीं, जिन्होंने मात्र 14 वर्ष की आयु में ही ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया था। वह बंगाल के क्रान्तिकारी संगठन युगांतर दल से जुड़ी हुई थीं, जो ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष के लिए प्रसिद्ध था। 14 दिसंबर 1931 को उन्होंने अपनी साथी शांति घोष के साथ मिलकर वर्तमान बंगलादेश में स्थित त्रिपुरा के जिला मजिस्ट्रेट चार्ल्स स्टीवेंस की उनके घर में घुसकर गोली मारकर हत्या कर दी थी। यह घटना ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारतीय किशोरियों के साहस और प्रतिरोध का महत्वपूर्ण प्रतीक बनी। इस घटना के बाद सुनीति चौधरी और शांति घोष को गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय उनकी आयु बहुत कम थी, इसलिए उन्हें मृत्युदंड न देकर आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। फांसी न मिलने से यह दोनों दुरूखी थीं की इन्हें मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति देने का अवसर नहीं मिला। भारत की स्वतंत्रता के बाद वह रिहा हुई और बाद में इन्होने सामान्य जीवन व्यतीत करते हुए समाज सेवा में अपना योगदान दिया।

31 मई 1725, जयंती : पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर

लोकमाता अहिल्याबाई के युद्ध में पारंगत एक वीरांगना एवं कुशल प्रशासिका थीं। प्रजा वत्सला होने के कारण प्रजा ने उन्हें देवी की उपाधि दी थी। उन्होंने अपने समय में महेश्वर नगर को एक ख्यातिप्राप्त व्यापारिक केंद्र बनाया था। उन्होंने अपने शासनकाल में अनेक धार्मिक कार्यों को संपन्न करवाया। 18वीं सदी में उन्होंने द्वारिका, रामेश्वर, बद्रीनारायण, सोमनाथ, अयोध्या, जगन्नाथ पुरी, काशी, गया, मथुरा, हरिद्वार सहित भारतवर्ष के अनेक तीर्थ स्थानों पर कई प्रसिद्ध एवं बड़े मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया साथ ही अनेक कुओं, घाटों व धर्मशालाओं का निर्माण भी करवाया। हिन्दू धर्म के शास्त्रों के संरक्षण एवं वैदिक शिक्षा के लिए उन्होंने विद्वान ब्राह्मणों को आश्रय देकर उनके लिए समुचित व्यवस्था की। उन्होंने वाराणसी स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर का पुर्ननिर्माण भी कराया था। सनातन संस्कृति के इतिहास में उनका योगदान स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

1 मई 1908, बलिदान दिवस - प्रफुल्ल चाकी

–डेस्क

10 दिसंबर, 1888 को जन्में क्रांतिकारी प्रफुल्ल चाकी और उनके साथी खुदी राम बोस ने कोलकाता के चीफ प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड को मारने की योजना बनाई। किंग्सफोर्ड को सेशन जज बनाकर मुजफ्फरपुर भेज दिया था, पर दोनों क्रांतिकारी भी उसके पीछे–पीछे मुजफ्फरपुर भी पहुँच गए। किंग्सफोर्ड की दिनचर्या का अध्ययन करने के बाद 30 अप्रैल 1908 को उसे मारने की योजना बनी। योजना के अनुसार उसके यूरोपियन क्लब से बाहर निकलते समय हमला किया जाना था लेकिन लौटते समय उसने बग्गी बदल ली। बम फेंका गया किन्तु उसकी बग्गी में उस समय दो यूरोपियन महिलाएँ बैठी थीं जो इस हमले में मारी गईं। किंग्सफोर्ड को मारने में सफलता समझ कर दोनों क्रांतिकारी घटना स्थल से भाग निकले। दुर्भाग्यवश एक पुलिस सब इंस्पेक्टर नंदलाल बनर्जी ने रेलगाड़ी में उन्हें पहचानकर चुपचाप अगले स्टेशन पर सूचना भेजकर उन्हें गिरफ्तार करने का प्रबंध कर लिया। किन्तु पुलिस से घिर जाने पर प्रफुल्ल चाकी ने अपनी ही पिस्तौल से 1 मई 1908 को अपना बलिदान दे दिया। इस घटना ने ब्रिटिश तंत्र को हिलाकर रख दिया था।

4 मई , 1649 जयन्ती महाराजा छत्रसाल

'बुंदेलखंड के शिवाजी' के नाम से प्रख्यात छत्रसाल ने मात्र 10 साल की बाल्यावस्था में तलवार से एक मुगल सैनिक का सिर उतार लिया था। 17 वर्ष की उम्र में छत्रसाल ने मुग़लो की कूटनीति, ताकत और कमजोरियां को समझने के लिए मुगल सेना में प्रवेश ले लिया था। मुगलों की तरफ से लड़ते हुए उन्होंने बीजापुर और देवगढ को भी जीता और सही समय आने पर मुगल सेना छोड़ दी।

मुगलों से लड़ाई और बुंदेलखंड जीतने के लिए छत्रसाल ने मां के दिए जेवर बेचकर सेना तैयार की। उनके औरंगजेब के साथ कई बार संघर्ष हुए। किन्तु औरंगज़ेब कभी, छत्रसाल को जीतने में सफल नहीं हो पाया। महाराजा छत्रसाल ने अपने रणकौशल व छापामार युद्ध नीति के बल पर मुगलों के छक्के छुड़ा दिए।

उनके गुरु स्वामी प्राणनाथ ने उन्हें,साम्राज्य विस्तार की प्रेरणा दी थी। उन्हीं के कहने पर छत्रसाल ने पन्ना को अपनी राजधानी बनाया। उन्होंने अपने 60 साल के योद्धा जीवन में औरंगजेब की भेजी सेनाओं से जितने युद्ध लड़े सभी में मुगलों को पराजित किया। उन्होंने बुंदेलखंड एवं मध्य भारत में मुगलों की लूट और विस्तार नीति को सफल नहीं होने दिया। वे बुंदेलखंड के हिन्दू हृदय सम्राट कहे जाते हैं।

4 मई , 1919 जयन्ती पद्मश्री (डॉ.) विष्णु श्रीधर वाकणकर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर ने 4000 से अधिक शैल चित्रों की खोज की और भारतीय कला भवन, ललित कला भवन, पुरातत्व उत्खनन शैली, चित्र शोध संस्थान से जुड़कर भारतीय ज्ञान परम्परा को संरक्षित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने विदेशी इतिहासकारों, अन्वेषकों के पूर्वाग्रहों तथा भ्रांत–धारणाओं तथा षडयन्त्रों के जाल से भारतीय इतिहास को निकाल कर उसे अपनी मेधा के बल पर विश्व में प्रतिष्ठा दिलवाई। उनके नेतृत्व में विशेषज्ञों के एक दल ने वेदों में वर्णित अब लुप्त हो चुकी सरस्वती नदी की खोज करने के लिए 4000 कि.मी. लम्बी यात्रा कर सरस्वती नदी के किनारे बसी आर्य सभ्यता से सम्बंधित महत्वपूर्ण शोध किया। शैल चित्रों के लिए प्रसिद्ध, अंतरराष्ट्रीय विरासत 'भीम बेटका' की खोज भी वाकणकर जी ने ही की थी।

7 मई 1861, जयंती गुरुवर रविन्द्र नाथ ठाकुर

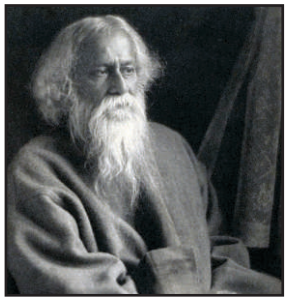

रवींद्रनाथ टैगोर एक प्रसिद्ध बंगाली कवि, दार्शनिक और संगीतकार थे, जिन्होंने भारत में साहित्य, संगीत और शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र का सांस्कृतिक नवजागरण किया। उन्होंने बंगाली साहित्य, कला और संगीत के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा को संरक्षित किया। भारतनिष्ठ शिक्षा प्रणाली को समर्पित शिक्षण संस्था शांति निकेतन को विश्व भारती विश्वविद्यालय के रूप में विकसित कर उन्होंने ब्रिटिश काल में भारत केन्द्रित शिक्षा प्रणाली के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1913 में साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त कर भारत का मानवर्धन किया। भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रगान आपके द्वारा ही रची गयी साहित्यिक रचनाएं हैं।

9 मई 1540, जयंती महाराणा प्रताप

महाराणा प्रताप माँ भारती के ऐसे सपूत थे जिन्होंने अकबर की इस्लामी साम्राज्य की विस्तार नीति को कभी सफल नहीं होने दिया। उन्होंने एक लम्बे समय तक अपनी मातृभूमि को मुस्लिम आक्रमणकारियों से सुरक्षित रखने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए आम जनमानस के साथ–साथ वनों में रहने वाली भील और अन्य जनजातियों को संगठित किया। एक राजा के रूप में उन्होंने प्रजावत्सल शासक होने का आदर्श प्रस्तुत किया। अकबर की कुटिल योजना के विरुद्ध पश्चिमी भारत में एक बड़ी शक्ति के रूप में उनका योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। सनातन धर्म–संस्कृति की रक्षा के लिए उन्होंने वनों में रहते हुए कष्टपूर्ण जीवन स्वीकार किया। उन्होंने अपने संकल्प के बल पर मुस्लिम आक्रमणकारियों के विरुद्ध वातावरण तैयार किया और जीवन भर उनसे संघर्ष करते हुए उनके लिए चुनौती बने रहे।

14 मई 1657, जयंती छत्रपति संभा जी राजे

धर्मवीर संभाजी महाराज न केवल एक महान योद्धा थे, बल्कि संस्कृत, मराठी, फारसी और अन्य भाषाओं के ज्ञाता भी थे। उन्होंने संस्कृत में "बुद्धिभूषण" नामक ग्रंथ की रचना की थी। छत्रपति संभाजी महाराज ने साहसपूर्वक औरंगज़ेब की विशाल मुग़ल सेना का मुकाबला किया। उन्होंने जबरन मतान्तरण के विरुद्ध आवाज़ उठाई और लाखों लोगों को आत्मसम्मान के साथ जीने का अधिकार दिलाया। 1689 में मुगलों द्वारा पकड़े जाने के बाद संभाजी महाराज को क्रूर यातनाएं दी गईं। उनसे इस्लाम स्वीकारने का दबाव बनाया गया, लेकिन उन्होंने कहा, "मैं हिंदू जन्मा हूँ और हिंदू ही मरूंगा!" उन्होंने सनातन हिंदू धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

19 मई 1824, जयंती : शूरवीर नाना साहेब

नाना साहेब 1857 के स्वातंत्र्य समर के एक प्रमुख नायक थे। उन्होंने तात्या टोपे के साथ मिलकर 1857 में ब्रिटिश राज के विरुद्ध कानपुर में स्वातंत्र्य समर का नेतृत्व किया था। उन्होंने कानपुर पर अधिकार कर लिया और कई मास तक इसे अंग्रेजों से आजाद रखा। नाना साहब ने कई स्थानों पर अंग्रेजी सेना को चुनौती देते हुए मातृभूमि को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंदुत्व एंड हिंद स्वराज : हिस्ट्रीज फॉरगेटेन डबल्स

– डॉ. अनिल कुमार निगम, प्रोफेसर, इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, गाजियाबाद, यूसी कैंपस

मकरंद आर. परांजपे की पुस्तक हिंदुत्व एंड हिंद स्वराजः हिस्ट्रीज फॉरगेटेन डबल्स भारतीय राष्ट्रवाद की जटिल बहस को समझने का एक गंभीर और चिंतनशील प्रयास है। यह पुस्तक दो प्रमुख वैचारिक धाराओं– हिंदुत्व और हिंद स्वराज के बीच के अंतर और संवाद को केंद्र में रखती है, जिनका प्रतिनिधित्व क्रमशः वीर सावरकर और महात्मा गांधी करते हैं।

लेखक का मूल तर्क यह है कि इन दोनों विचारधाराओं का संघर्ष केवल ऐतिहासिक नहीं है, बल्कि आज भी भारत की राजनीति, समाज और सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित कर रहा है। इस दृष्टि से यह पुस्तक समकालीन भारत को समझने के लिए अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है।

पुस्तक को तीन प्रमुख हिस्सों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में परांजपे भारतीय इतिहास लेखन की समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं। वे मानते हैं कि भारत का इतिहास लंबे समय तक औपनिवेशिक दृष्टिकोण से प्रभावित रहा है, जिससे भारतीय सभ्यता की मौलिकता और गहराई को पर्याप्त महत्व नहीं मिला। लेखक इस स्थिति को सुधारने के लिए स्वदेशी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

दूसरे भाग में पुस्तक भारतीय पहचान और औपनिवेशिक प्रभाव के संदर्भ में हिंदुत्व और हिंद स्वराज की तुलना करती है। गांधी का विचार अहिंसा, नैतिकता और समावेशिता पर आधारित है, जबकि सावरकर का दृष्टिकोण सांस्कृतिक एकता और राजनीतिक सशक्तिकरण पर केंद्रित है। लेखक इन दोनों विचारों को विरोधी ध्रुवों के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय एक संवाद के रूप में देखने की कोशिश करते हैं।

तीसरे भाग में लेखक इन विचारधाराओं को वर्तमान भारत के संदर्भ में रखते हैं। वे बताते हैं कि आज का भारत इन दोनों विचारों के बीच संतुलन बनाने की प्रक्रिया से गुजर रहा है। यह संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि वैचारिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी दिखाई देता है।

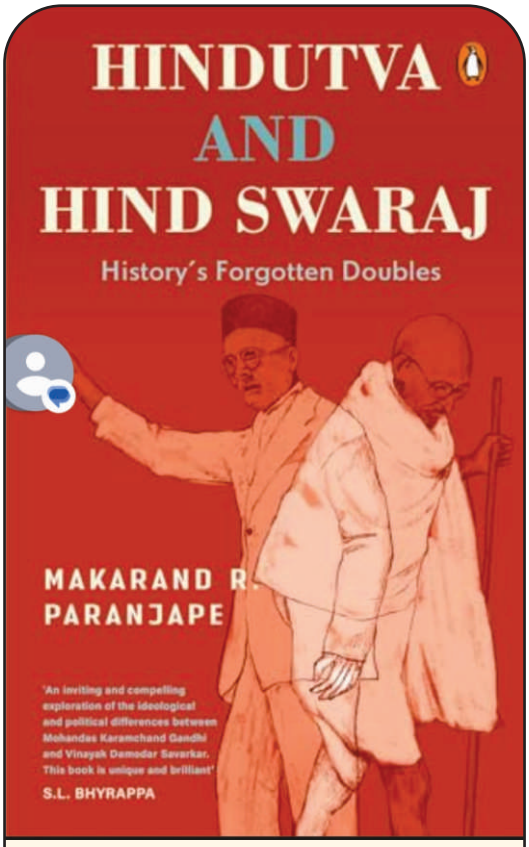

पुस्तक विवरण

लेखक : मकरंद आर. परांजपे

प्रकाशक : पेंगुइन रैंडम हाउस, भारत

प्रकाशन वर्ष : सितंबर, 2025

मूल्य : ₹799

पृष्ठ : 392

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसका संवादात्मक दृष्टिकोण है। परांजपे किसी एक विचारधारा का पक्ष लेने के बजाय दोनों के बीच संतुलित चर्चा प्रस्तुत करते हैं। इससे पाठक को एक व्यापक और संतुलित दृष्टि मिलती है।

हालांकि, पुस्तक कुछ स्थानों पर दार्शनिक दृष्टिकोण रखती है, जिससे सामान्य पाठकों को समझने में कठिनाई हो सकती है। इसके बावजूद, यह पुस्तक अपने विषय को गहराई से समझाने में सफल रहती है।

यह पुस्तक भारतीय राष्ट्रवाद की बहस को नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान करती है। हिंदुत्व एवं स्वराज पाठकों को किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के बजाय सोचने और विमर्श करने के लिए प्रेरित करती है। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

धुरंधर -2 : द रिवेंज

– डॉ. अनुपमा भारद्वाज

धुरंधर - 2 : द रिवेंज एक ऐसी फिल्म बनकर सामने आती है, जो सिर्फ मनोरंजन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि दर्शकों को भीतर तक सोचने पर मजबूर करती है। आदित्य धर के निर्देशन में बनी यह फिल्म एक बड़े कैनवस पर रची गई कहानी है, जिसमें भावनाओं, देशभक्ति और मानवीय संघर्ष का गहरा मेल देखने को मिलता है। फिल्म का हर दृश्य जैसे किसी अनकही कहानी को बयां करता है, कहीं दर्द है, कहीं आक्रोश, और कहीं उम्मीद की एक किरण। रणवीर सिंह ने अपने अभिनय से इस कहानी को जीवंत कर दिया है; उनका किरदार सिर्फ देखा नहीं, बल्कि महसूस किया जाता है। उनकी आंखों में झलकती पीड़ा, उनके चेहरे पर उभरता संकल्प, और हर दृश्य में उनकी ऊर्जा फिल्म को एक अलग ऊंचाई देती है। उनके साथ आर. माधवन, संजय दत्त और अर्जुन रामपाल जैसे सशक्त कलाकारों की मौजूदगी कहानी को और भी प्रभावशाली बना देती है, जिससे फिल्म एक मजबूत और संतुलित रूप लेती है। फिल्म का राजनीतिक पहलू सीधे-सीधे बयान नहीं किया गया, बल्कि घटनाओं और संकेतों के माध्यम से दर्शकों के सामने रखा गया है, जो इसे और दिलचस्प बनाता है। यह दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि हर घटना के कई पहलू हो सकते हैं और सच्चाई हमेशा उतनी सरल नहीं होती जितनी दिखाई देती है। फिल्म किसी एक दृष्टिकोण को थोपने के बजाय एक संवाद की शुरुआत करती है, जहां हर दर्शक अपने अनुभव और समझ के अनुसार अपनी व्याख्या करता है। यही कारण है कि यह फिल्म आज के समय में प्रासंगिक महसूस होती है, जब हर मुद्दे को लेकर अलग-अलग नजरिए सामने आते हैं। शाश्वत सचदेव का संगीत इस पूरी यात्रा में भावनाओं को और गहराई देता है; कई दृश्यों में बैकग्राउंड स्कोर इतना प्रभावशाली है कि वह बिना शब्दों के ही कहानी कह जाता है। तकनीकी दृष्टि से भी फिल्म बेहद सशक्त है। सिनेमैटोग्राफी, एक्शन सीक्वेंस और एडिटिंग सभी मिलकर इसे एक भव्य और यादगार अनुभव बनाते हैं। हर फ्रेम में एक सोच और मेहनत नजर आती है, जो दर्शकों को स्क्रीन से बांधे रखती है। अंततः, धुरंधर-2: द रिवेंज एक ऐसी फिल्म है जो जवाब देने के बजाय सवाल छोड़ती है, और शायद यही इसकी सबसे बड़ी खूबी है।

यह फिल्म हर दर्शक के मन में एक अलग प्रभाव छोड़ती है किसी के लिए यह देशभक्ति की कहानी है, किसी के लिए मानवीय संघर्ष की, और किसी के लिए सोच को नई दिशा देने वाली एक यात्रा। यही बहुआयामी स्वरूप इसे खास बनाता है और यही कारण है कि यह फिल्म सिर्फ देखी नहीं जाती, बल्कि लंबे समय तक महसूस की जाती है।

शहरों में लौटेगी चहचहाहट : गौरैया बचाओ, पर्यावरण बचाओ

गौरैया एक छोटी सी, साधारण सी दिखने वाली चिड़िया, लेकिन हमारे जीवन और पर्यावरण से गहराई से जुड़ी हुई। कभी हर घर की छत, आँगन और खिड़की पर फुदकती हुई यह चिड़िया आज शहरों से लगभग गायब होती जा रही है। उसकी मधुर चहचहाहट, जो कभी हमारी सुबहों की पहचान हुआ करती थी, अब यादों में सिमटती जा रही है। यह केवल एक पक्षी के कम होने की कहानी नहीं है, बल्कि यह हमारे पर्यावरण में बिगड़ते संतुलन का संकेत है। गौरैया का अस्तित्व हमें बताता है कि हमारे आसपास का वातावरण कितना सुरक्षित और संतुलित है। जब गौरैया कम होती है, तो समझ लीजिए कि प्रकृति भी हमसे दूर जा रही है तेजी से बढ़ते शहरीकरण ने प्राकृतिक जीवन को बहुत प्रभावित किया है। कंक्रीट के जंगल बनने से घोंसले बनाने की जगह खत्म हो गई है कीटनाशकों और रसायनों के अत्यधिक उपयोग से कीड़े-मकोड़े कम हो गए हैं, जो गौरैया का मुख्य भोजन हैं। मोबाइल टावरों और प्रदूषण का प्रभाव भी उनके जीवन पर पड़ रहा है, आधुनिक घरों में खुले स्थान, रोशनदान और आँगन का अभाव वाहनों और धूल-धुएँ से बढ़ता प्रदूषण शहरी जीवन में पानी और अनाज की उपलब्धता कम होना बताता है कि गौरैया केवल एक पक्षी नहीं, बल्कि पर्यावरण की संरक्षक है। यह कीड़ों को खाकर फसलों और पौधों की रक्षा करती है, जैव-विविधता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बच्चों को प्रकृति से जोड़ने का माध्यम है। यह हमें प्रकृति के साथ संतुलन में जीने का संदेश देती है।

यदि हर व्यक्ति छोटे-छोटे प्रयास करे, तो बड़ा बदलाव संभव है जैसे- नेस्ट बॉक्स लगाएं बालकनी, खिड़की या पेड़ों पर छोटे घोंसले रखें, दाना-पानी की व्यवस्था करें, रोज थोड़ा अनाज और साफ पानी रखें, खासकर गर्मियों में पेड़-पौधे लगाएं स्थानीय और घने पौधे लगाकर प्राकृतिक आवास बनाएं, रसायनों का कम उपयोग करें, अहर्गेनिक तरीकों को अपनाएं मिट्टी के बर्तन रखें, गर्मी में पानी जीवन बचाता है छोटे छेद या रोशनदान बनाए रखें ताकि वे घरों में घोंसला बना सकें। जागरूकता फैलाएं, बच्चों और समाज को इसके महत्व के बारे में बताएं, स्थानीय अभियान चलाएं सोसाइटी या सेक्टर स्तर पर "Save Sparrow" अभियान प्लास्टिक और प्रदूषण कम करें, स्वच्छ वातावरण उनके लिए जरूरी है। गौरैया का लौटना केवल एक पक्षी का लौटना नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ हमारे रिश्ते का पुनर्जीवन है। अगर हम आज ध्यान देंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ भी उस मधुर चहचहाहट को सुन पाएंगी, जो जीवन में सुकून और खुशी भर देती है। 'गौरैया को बचाना ही पर्यावरण को बचाना है।' आइए, हम सब मिलकर एक छोटा सा कदम उठाएं, ताकि हमारे शहर फिर से चिड़ियों की आवाज़ से गूंज उठें।

सूरज की किरणों से तैयार हो रहा 15 हजार लोगों का खाना

–डेस्क

मध्य एशिया में चल रहे युद्ध के चलते सम्पूर्ण विश्व में गैस और तेल को लेकर एक संकट खड़ा हो गया है, जिसने हमें ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की दिशा में सोचने को मजबूर कर दिया है। इसी बीच रसोई गैस सिलिंडर को लेकर मची अफरा–तफरी के बीच उत्तराखंड के गढ़वाल व कुमाऊं के कई जिलों से एक अच्छी खबर है जहां सूरज की किरणों से चालित सोलर रसोई सबको प्रेरित कर रही है। यह रसोई अद्भुत है। इसमें न आग है, न धुआं और न ही कोई पारंपरिक ईंधन का प्रयोग होता है। यहां हजारों घरों और स्थानों में 15 हजार लोगों का भोजन सोलर रसोई में तैयार हो रहा है। उत्तराखंड अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण वर्षों से सोलर कुकिंग तकनीक को प्रोत्साहित कर रहा है। घरेलु उपयोग के साथ साथ कुछ स्थानों पर स्कूलों में मिड डे मील भी सोलर कुकर पर तैयार किया जा रहा है। पहाड़ों पर अच्छी धुप होने के कारण यह तकनीक यहां सफल सिद्ध हो रही है।

मछली पालन से आत्मनिर्भरता

पारंपरिक खेती में घाटा और कम मुनाफे से परेशान होकर बागपत के किसान हबीब ने मछली पालन को अपनाया और आज वह अपनी महज डेढ़ बीघा जमीन से सालाना ₹2.5 लाख तक का शुद्ध मुनाफा कमा रहे हैं। वह पहले पारंपरिक खेती करते थे, जिसमें कम मुनाफा होने के कारण उन्हें अक्सर आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता था। अपनी जरूरतों को पूरा करना भी मुश्किल हो रहा था। उन्होंने यूट्यूब के जरिए मत्स्य पालन की बारीकियों को सीखा। और अपनी डेढ़ बीघा जमीन पर बने पुराने तालाब में मछलियों का पालन शुरू किया। दो साल पहले शुरू किए गए इस व्यवसाय से सभी खर्च निकालने के बाद, उन्हें अब सालाना लगभग ₹2.5 लाख लाभ हो रहा है। यह आय अन्य पारंपरिक फसलों के मुकाबले पांच गुना से भी अधिक है। उनकी इस सफलता को देखकर क्षेत्र के अन्य किसान भी प्रेरित हो रहे हैं और मत्स्य पालन की ओर रुख कर रहे हैं।

शहद ने घोली जीवन में मिठास

मुरादाबाद के बिलारी क्षेत्र के रोजा गांव के किसान नेपाल सिंह आज हनी मैन के नाम से पहचान बना चुके हैं। उन्होंने यह साबित कर दिया है कि अगर खेती के साथ नवाचार और मेहनत जोड़ दी जाए, तो कम जमीन भी बड़ी आमदनी का जरिया बन सकती है। महज एक एकड़ जमीन के मालिक नेपाल सिंह ने पारंपरिक खेती के साथ मधुमक्खी पालन को अपनाकर अपनी आय के नए रास्ते खोल दिए। साल 2012 में उन्होंने करीब 60 हजार रुपये की लागत से 16 मधुमक्खी बक्सों के साथ शुरुआत की। शुरुआती दौर में कई चुनौतियां भी सामने आईं, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। मेहनत और अनुभव के साथ उनका काम बढ़ता गया। आज उनके पास करीब 500 मधुमक्खी बॉक्स हैं और यह काम उनके परिवार की आय का मजबूत सहारा बन चुका है। उन्होंने अपनी पोती "नित्या" के नाम से शहद की ब्रांडिंग की और आज उनका शहद 500 रुपये प्रति किलो तक बिक रहा है। नेपाल सिंह अन्य किसानों को भी प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देकर आत्मनिर्भर बना रहे हैं। आसपास के करीब 25 किसान मधुमक्खी पालन से जुड़ चुके हैं।

युवा संवाद

संकलन – विनोद कुमार

पर्यावरण संरक्षण : आज की आवश्यकता, कल का भविष्य

प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना भी असंभव है, क्योंकि पर्यावरण ही हमें शुद्ध वायु, स्वच्छ जल, पौष्टिक भोजन और जीवनोपयोगी संसाधन प्रदान करता है। इसमें भूमि, वनस्पति, वन्यजीव और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र सम्मिलित हैं। किंतु वर्तमान समय में तीव्र औद्योगीकरण, अंधाधुंध वनों की कटाई, बढ़ते वाहनों का धुआँ और प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग ने पर्यावरण संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इसके परिणामस्वरूप प्रदूषण, विभिन्न बीमारियाँ और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वृक्षारोपण को बढ़ावा देना, स्वच्छता बनाए रखना, जल एवं ऊर्जा का संरक्षण करना तथा जन–जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम आज सजग होकर प्रयास करें, तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और संतुलित भविष्य सुनिश्चित किया जा सकता है। – तमन्ना सिद्धार्थ, स्नातक छात्र, मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविधालय, गाजियाबाद

स्वच्छ पर्यावरण : स्वस्थ जीवन की कुंजी

पर्यावरण संरक्षण आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके लिए हमें अपने दैनिक जीवन में छोटे–छोटे लेकिन प्रभावी बदलाव अपनाने होंगे। प्लास्टिक के उपयोग को कम कर जूट या कपड़े के थैलों का प्रयोग करना चाहिए, जिससे प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सके। अधिक से अधिक पेड़–पौधे लगाकर हरित वातावरण को बढ़ावा देना भी हमारी जिम्मेदारी है। साथ ही, पानी और बिजली जैसे संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हुए, उपयोग के बाद नल और विद्युत उपकरणों को बंद रखना आवश्यक है। कचरे को सूखा और गीला अलग–अलग करना स्वच्छता और पुनर्चक्रण के लिए उपयोगी है। इसके अतिरिक्त, छोटी दूरी के लिए साइकिल का उपयोग न केवल प्रदूषण कम करता है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी सिद्ध होता है।

– अनामिका, स्नातक छात्र, मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविधालय, गाजियाबाद

पर्यावरण चेतावनीरू बदलती आदतों से ही बचेगा भविष्य

खिड़की से बाहर बढ़ता तापमान और असमय वर्षा स्पष्ट संकेत हैं कि प्रकृति का संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। पर्यावरण संरक्षण अब विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन चुका है। इसके लिए हमें अपनी दैनिक आदतों में बदलाव लाना होगा। सर्कुलर इकोनॉमी को अपनाकर कचरे का पुनः उपयोग करना समय की मांग है। ग्रीन टेक्नोलॉजी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से ऊर्जा प्रबंधन को अधिक कुशल बनाया जा सकता है। स्मार्ट ग्रिड और सेंसर आधारित सिंचाई प्रणालियाँ जल एवं ऊर्जा संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। साथ ही, फास्ट फैशन की प्रवृत्ति को छोड़कर टिकाऊ विकल्प अपनाना आवश्यक है। सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना और सिंगल यूज प्लास्टिक का त्याग करना भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रभावी कदम सिद्ध होंगे।

–उज्ज्वल आनंद, पत्रकारिता छात्र, (बैचलर ऑफ़ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन), आई0 एम0एस0, यूनिवर्सिटी कैंपस, गाजियाबाद

पर्यावरण- सुरक्षित भविष्य का मूल धन

आज के समय में तीव्र औद्योगीकरण और बढ़ते उपभोक्तावाद ने प्रकृति के संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। पर्यावरण केवल संसाधनों का संग्रह नहीं, बल्कि मानव जीवन की आधारशिला और हमारी सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा है। लगातार हो रही वनों की कटाई, वायु और जल प्रदूषण में वृद्धि, तथा प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग ने पारिस्थितिकी तंत्र को संकट में डाल दिया है। यह स्थिति न केवल वर्तमान जीवन को प्रभावित कर रही है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को भी खतरे में डाल रही है। इसलिए आवश्यक है कि हम पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाएँ। सतत विकास की दिशा में कदम बढ़ाते हुए हमें संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए और प्रकृति संरक्षण को अपनी जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहिए, ताकि एक सुरक्षित, स्वच्छ और संतुलित भविष्य सुनिश्चित किया जा सके।

–संचिता मुख़र्जी , पत्रकारिता छात्र, (बैचलर ऑफ़ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन) आई0 एम0एस0, यूनिवर्सिटी कैंपस , ग़ाज़ियाबाद

'विजडन अल्मनैक 2026 में भारत का परचम' वैश्विक क्रिकेट जगत में छाया भारतीय जलवा

संकलन – कुमारी श्रेयांशी, शोधछात्रा

क्रिकेट की "बाइबिल" मानी जाने वाली विजडन क्रिकेटर्स अल्मनैक के 2026 संस्करण में भारतीय क्रिकेटरों ने इतिहास रच दिया है। कुल 9 में से 7 प्रमुख पुरस्कार अपने नाम कर भारत ने वैश्विक क्रिकेट में अपनी ताकत का दमदार प्रदर्शन किया है।

जहाँ दीप्ति शर्मा को लीडिंग वीमेंस क्रिकेटर इन दा वर्ल्ड और अभिषेक शर्मा को लीडिंग टी–20 क्रिकेटर चुना गया, वहीं अन्य भारतीय सितारों ने भी अपनी चमक बिखेरी।

विजडन 2026 में चमके ये भारतीय सितारे :

- ♦ यशस्वी जायसवाल – वर्ष के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट बल्लेबाज़
- ♦ जसप्रीत बुमराह – वर्ष के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज़
- ♦ रोहित शर्मा – वर्ष के सर्वश्रेष्ठ कप्तान
- ♦ स्मृति मंधाना – वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला बल्लेबाज़

यह उपलब्धि सिर्फ पुरस्कारों की संख्या नहीं, बल्कि भारतीय क्रिकेट की निरंतरता, गहराई और विश्वस्तरीय प्रदर्शन का प्रमाण है। पुरुष और महिला दोनों वर्गों में भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा यह दर्शाता है कि भारत अब क्रिकेट की महाशक्ति बन चुका है।

विजडन 2026 भारत के लिए सिर्फ एक उपलब्धि नहीं, बल्कि क्रिकेट इतिहास में स्वर्णिम अध्याय है, जहाँ हर भारतीय खिलाड़ियों ने देश का मान बढ़ाया और दुनिया को भारतीय क्रिकेट की ताकत का अहसास कराया।

मई 2026 माह के उत्सव विवरण

संकलन - अपर्णा इरा

1 मई- श्रम दिवस : इसे अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस भी कहा जाता है, यह अवसर श्रम आंदोलन के संघर्षों और उपलब्धियों का जश्न मनाता है। भारत में, इसे मई में राष्ट्रीय अवकाश के रूप में मनाया जाता है, जिसमें श्रमिक संघों द्वारा रैलियों, भाषणों और जागरूकता अभियानों का आयोजन किया जाता है।

1 मई - बुद्ध पूर्णिमा : बुद्ध पूर्णिमा बौद्ध धर्म का सबसे पवित्र दिन है, जिसे गौतम बुद्ध के जन्म, ज्ञान और मृत्यु को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है। परंपराओं में मंदिरों में जाना, प्रार्थना सभाओं में भाग लेना और दान और दया के कार्य करना शामिल है।

9 मई - गुरु रवींद्रनाथ जयंती : यह दिन नोबेल पुरस्कार विजेता और भारत के राष्ट्रगान के लेखक रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में मनाया जाने वाला, यह कविता पाठ, रवींद्र संगीत प्रदर्शन और स्कूलों और कला संस्थानों में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा चिह्नित किया जाता है।

9 मई - महाराणा प्रताप जयंती : यह अवकाश मुगल शासन के खिलाफ अपने प्रतिरोध के लिए मनाए गए राजपूत राजा महाराणा प्रताप की जयंती का सम्मान करता है। यह दिन राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में सामुदायिक कार्यक्रमों, जुलूसों और उनकी बहादुरी को श्रद्धांजलि देने के साथ मनाया जाता है। हल्दीघाटी की प्रसिद्ध लड़ाई, जहाँ उन्होंने सम्राट अकबर की सेना के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, आज भी याद की जाती है।

25 मई-गंगा दशहरा : यह पूर्व ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को पड़ता हैं, जब मां गंगा का ध्यानी पर अवतरण हुआ था। इस दिन स्नान और दान का विशेष महत्व हैं।

26 मई - निर्जला एकादशी : इस एकादशी तिथि को पानी की एक भी बूंद नहीं पीनी चाहिए। इसकी शुरुआत दशमी तिथि से हो जाती हैं व्रत पालन करने वाला 12वें दिन भगवान विष्णु की पूजा और ब्राम्हणों को भोजन कराने के बाद उपवास तोड़ता हैं।

30 मई - श्री गुरु अर्जुन देव जी का शहादत दिवस : श्री गुरु अर्जुन देव जी का शहादत दिवस 1606 में पांचवें सिख गुरु के बलिदान को याद करता है। दुनिया भर के सिख इस दिन को गंभीरता से मनाते हैं, विशेष प्रार्थना सभाएं, कीर्तन (भक्ति गायन) और लंगर (सामुदायिक रसोई) का आयोजन करते हैं।

यन्ग अचीवर्स

– पल्लवी भारद्वाज

भारत सदियों से ही प्रतिभाओं की भूमि रही है, चाहे वह कौटिल्य हो जिन्होंने हमें कूटनीति, राज्य नीति का ज्ञान दिया हो, या फिर वह ब्रह्मगुप्त हो जिन्होंने 'शून्य' का आविष्कार किया। अब यह नया भारत उन नन्हे सितारों से भी रोशन है, जो अपनी उम्र से कहीं आगे की सोच रखते है और कार्य से न केवल देश का नाम रोशन कर रहे हैं, बल्कि लाखों बच्चों के लिए प्रेरणा भी बन रहे है। आएं जानते है कुछ ऐसे ही प्रेरणादायक बच्चों कहानियां, जिन्होंने अपनी कला और प्रतिभा से सभी को चकित कर दिया है।

सत्या भारती : यमुना की लहरों को जीतने वाली प्रयागराज की रहने वाली एक 4 वर्षीय बालिका सत्या ने अपने अद्भुत उपलब्धि से लोगों को दांतों तले उंगली दबाने को मजबूर कर दिया। इस बालिका ने अपने जन्मदिन पर 900 मीटर लंबी यमुना को बहुत ही आसानी से एक छोर से दूसरे छोर तक 21 मिनट 28 सेकंड में तैरकर पार किया, और अपनी तैराकी क्षमता को साबित कर अपने साहस और दृढ़ निश्चय का प्रमाण दिया। इस सफलता को प्राप्त करने के लिए सत्या रोजाना 2–3 घंटे यमुना में तैराकी करती, और साथ ही अपनी पढ़ाई भी किया करती। इतनी कम उम्र में यमुना जैसी नदी तैर कर पार करना, बहुत ही जोखिम भरा कार्य है लेकिन इस बालिका ने नियमित अभ्यास, परिवार के सहयोग और हौसले के बल पर इस असंभव और जोखिम भरे कार्य को भी संभव कर दिखाया है।

आराध्या जैन- नवाचार की नई पहचान : आराध्या जैन भारत की एक प्रतिभाशाली युवा इनोवेटर है, जिन्होंने महज 9 वर्ष की उम्र में नवाचार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपना परचम लहराया है। 26 जून 2025 को ब्रिटिश संसद के ऐतिहासिक 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में आयोजित भव्य समारोह 'ग्लोबल चाइल्ड प्रोडिजी अवॉर्ड्स 2025' में आराध्या को इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी की श्रेणी में इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार दुनिया भर के प्रतिभाशाली बच्चों के लिए दिया जाता है जिन्होंने अलग अलग श्रेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया हो। गाजियाबाद की रहने वाली यह बालिका रोबोटिक्स, प्रोग्रामिंग और स्टेम के श्रेत्र में रुचि रखती है और काम भी करती है। आराध्या ने कई परियोजनाओं पर काम किया है, जैसे कि ट्रैफिक नेविगेटर, एक स्व–चलित कार जो ट्रैफिक समस्याओं सुलझाने में मदद कर सकती है; इंटेलिजेंट टोल गेट्स, स्मार्ट तकनीक पर आधारित आदि। ब्रिटिश संसद जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आराध्या ने न केवल अपने माता पिता का नाम रोशन किया है साथ हीं भारत को भी एक नई पहचान दी है।

त्रिशा थोसर- अभिनय की चमकती प्रतिभा : कम उम्र में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाली एक होनहार बाल कलाकार जिसने मात्र 4 वर्ष की उम्र में राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम बनाया है। इस नन्हीं मराठी अभिनेत्री को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा 71वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 2025 में फिल्म 'नाल 2' के लिए सर्वश्रेठ बाल कलाकार के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस फिल्म में त्रिशा ने मुख्य किरदार निभाया था जिसे दर्शकों और समीक्षकों ने बहुत सराहा। इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को जीतकर त्रिशा थोसर ने कमल हासन का पिछला रिकॉर्ड तोड़, सबसे कम उम्र की राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता बन गई है। इस बालिका ने अपने अभिनय से साबित कर दिया कि कला की कोई उम्र नहीं होती।

आर्यवीर : यंगेस्ट रेडियो जॉकी : कर्नाटक के बेलगावी के रहने वाले 11 साल के आर्यवीर, भारत के सबसे कम उम्र के रेडियो जॉकी है। केवल 9 साल की आयु से 'वॉयस ऑफ गोकाक 89.6 एफएम' कम्युनिटी रेडियो स्टेशन पर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर उन्होंने यह अनूठा कीर्तिमान स्थापित किया। आर्यवीर ने कश्मीर की रहने वाली 19 वर्ष की समनिया भट का रिकॉर्ड तोड़ कर "इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स" में सबसे कम उम्र के रेडियो जॉकी के रूप में अपना नाम दर्ज किया। इस बालक ने 'दिनकोंडु श्लोक' नामक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें वह प्रतिदिन एक नया श्लोक सुनाया करता। इसके अलावा, उन्होंने स्कूली बच्चों के 63 साक्षात्कार भी आयोजित किए। इतनी कम उम्र में अपनी मधुर आवाज और आत्मविश्वास से रेडियो जगत में एक नई पहचान बनाना और साक्षात्कार लेना इस बालक की लगन को दर्शाता है और अन्य बच्चों को भी प्रेरणा देता है।

ये नए भारत के यन्ग अचीवर्स, हमें सिखाते हैं कि उम्र सफलता प्राप्त करने के लिए कभी बाधा नहीं बनती। साहस, आत्मविश्वास, परिवार का साथ, लगन, और रुचि किसी को भी सफलता प्राप्त करने से भी रोकती, और जब यह सब कोई छोटी उम्र में ही सीख जाए तो वह ऐसे यन्ग अचीवर्स बन जाते हैं।

व्यर्थ की चिंता

- अल्पना बिमल

एक व्यक्ति बहुत दिनों से तनावग्रस्त चल रहा था जिसके कारण वह काफी चिड़चिड़ा तथा क्रोध में रहने लगा था। वह सदैव इस बात से परेशान रहता था कि घर के सारे खर्चे उसे ही उठाने पड़ते हैं, पूरे परिवार की जिम्मेदारी उसी के ऊपर है, किसी ना किसी रिश्तेदार का उसके यहाँ रोज आना जाना लगा ही रहता है, उसे बहुत ज्यादा खर्च करना पड़ता है आदि – आदि। इन्हीं बातों को सोच सोच कर वह अक्सर बहुत परेशान रहता था, अपने बच्चों को अक्सर डांट देता था तथा अपनी पत्नी से भी अधिकतर उसका किसी न किसी बात पर झगड़ा होता रहता था। इसी प्रकार समय बीत ता गया।

एक दिन उसका बेटा उसके पास आया और बोला... पिताजी मेरा स्कूल का होमवर्क करा दीजिये प्लीज। वह व्यक्ति पहले से ही तनाव में था, इसलिए उसने बेटे को जोर से डांट कर भगा दिया, लेकिन जब थोड़ी देर बाद उसका क्रोध शांत हुआ तो वह बेटे के पास गया। उसने देखा कि बेटा गहरी नींद में सोया हुआ है और उसके हाथ में उसके होमवर्क की कॉपी है।

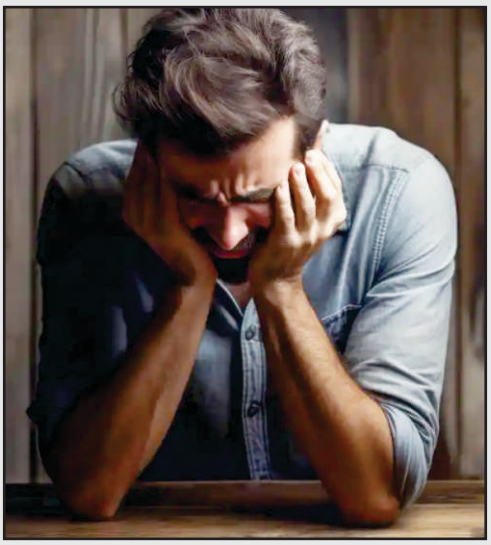

उसने धीरे से जब कॉपी लेकर जैसे ही नीचे रखनी चाही, उसकी नजर होमवर्क के टाइटल पर पड़ी। होमवर्क का टाइटल था...वे चीजें जो हमें शुरू में अच्छी नहीं लगतीं, लेकिन बाद में वे अच्छी ही होती हैं। इस टाइटल पर बच्चे को एक पैराग्राफ लिखना था जो उसने लिख लिया था। उत्सुकतावश उसने बच्चे का लिखा पढ़ना शुरू किया बच्चे ने लिखा था...

मैं अपने फाइनल एग्जाम को बहुंत धन्यवाद देता हूँ क्योंकि शुरू में तो ये बिलकुल अच्छे नहीं लगते लेकिन इनके बाद स्कूल की छुट्टियाँ पड़ जाती हैं। मैं खराब स्वाद वाली कड़वी दवाइयों को बहुत धन्यवाद देता हूँ क्योंकि शुरू में तो ये कड़वी लगती हैं लेकिन ये मुझे बीमारी से ठीक करती हैं। मैं सुबह – सुबह जगाने वाली उस अलार्म घड़ी को बहुत धन्यवाद देता हूँ जो मुझे हर सुबह बताती है कि मैं जीवित हूँ। मैं ईश्वर को भी बहुत धन्यवाद देता हूँ जिसने मुझे इतने अच्छे पिता दिए क्योंकि उनकी डांट मुझे शुरू में तो बहुत बुरी लगती है लेकिन वो मेरे लिए खिलौने लाते हैं, मुझे घुमाने ले जाते हैं और मुझे अच्छी अच्छी चीजें खिलाते हैं और मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे पास पिता हैं क्योंकि मेरे दोस्त राजू के तो पिता ही इस दुनिया में नहीं हैं। बच्चे का होमवर्क पढने के बाद वह व्यक्ति जैसे अचानक नींद से जाग गया हो। उसकी सोच बदल सी गयी। बच्चे की लिखी बातें उसके दिमाग में बार बार घूम रही थीं। खासकर वह अंतिम वाली लाइन। उसकी नींद उड़ गयी थी। फिर वह व्यक्ति थोडा शांत होकर बैठा और उसने अपनी परेशानियों के बारे में सोचना शुरू किया...

मुझे घर के सारे खर्चे उठाने पड़ते हैं, इसका मतलब है कि मेरे पास घर है और ईश्वर की कृपा से मैं उन लोगों से बेहतर स्थिति में हूँ जिनके पास घर नहीं है। मुझे पूरे परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है, इसका मतलब है कि मेरा परिवार है, पत्नी बच्चे हैं और ईश्वर की कृपा से मैं उन लोगों से ज्यादा खुशनसीब हूँ जिनके पास परिवार नहीं हैं और वो दुनियाँ में बिल्कुल अकेले हैं। मेरे यहाँ कोई ना कोई मित्र या रिश्तेदार आता जाता रहता है, इसका मतलब है कि मेरी एक सामाजिक हैसियत है और मेरे पास मेरे सुख दुःख में साथ देने वाले लोग हैं। मैं बहुत ज्यादा खर्च करता हूँ, इसका मतलब है कि मेरे पास अच्छी नौकरी है और मैं उन लोगों से बेहतर हूँ जो बेरोजगार हैं या पैसों की वजह से बहुत सी चीजों और सुविधाओं से वंचित हैं। हे ! मेरे भगवान् ! तेरा बहुत बहुत धन्यवाद मुझे क्षमा करना, मैं तेरी कृपा को पहचान नहीं पाया।

इसके बाद उसकी सोच एकदम से बदल गयी, उसकी सारी परेशानी, सारी चिंता एक दम से जैसे खत्म हो गयी। वह एकदम से बदल सा गया। वह भागकर अपने बेटे के पास गया और सोते हुए बेटे को गोद में उठाकर उसके माथे को चूमने लगा और अपने बेटे को तथा ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।

ज्योत से ज्योत जलाते चलो...

– सन्ध्या गोयल सुगम्या

राहुल, अभय और शशांक तीनों अपने अपने घर से दूर, शांतिनगर में रहकर एक बड़ी फर्म के एक प्लान्ट पर काम कर रहे थे। तीनों मैकेनिकल इंजीनियर थे। साथ काम करते करते तीनों की दोस्ती हुई, फिर तीनों एक ही फ्लैट किराये पर लेकर रहने लगे। वहाँ से एक कैब से साथ–साथ प्लान्ट पर जाते। प्लान्ट पर जाते हुए रास्ते में एक ऐसी जगह आती, जहाँ आसपास का सारा कूड़ा डाल दिया जाता था। इस कूड़े पर गायें आकर मुँह मारती रहतीं। एक दिन इसी बात पर तीनों दोस्तों में चर्चा होने लगी।

राहुल बोला, 'देखो यार! किसी ने इस गाय की पूजा की होगी, इसके माथे पर टीका है और सींगों में माला बँधी है।'

अभय बोला, 'और अब यह बेचारी कूड़े में खाना ढूँढ रही है। ऐसी पूजा से क्या फायदा!'

शशांक बोला, 'तो क्या पूजा करने वाला उसके साथ खाना पैक करके बांधेगा'? उसके स्वर में व्यंग था।

राहुल बोला, 'अभय ठीक कह रहा है। एक ओर तो लोग गाय को माता कहते हैं, दूसरी ओर कोई इस बात की फिक्र नहीं करता कि ये बेचारी सड़क पर क्या खाकर पेट भर रही है। जब तक ये दूध देने लायक रहती हैं, तब तक लोग इन्हें पालते हैं, फिर ऐसे आवारा भटकने को छोड़ देते हैं।'

अभय बोला, 'यार, एक काम तो हम भी कर सकते हैं'। सबने पूछा 'क्या?', तो उसने सबको अपने मन की बात बताई। सबको लगा कि उसकी बात में दम है।

जिस फ्लैट में ये लोग रह रहे थे, उसके पिछवाड़े में प्लास्टिक के दो पुराने ड्रम पड़े थे, जो किसी समय में पानी स्टोर करने के काम आते होंगे। पर फिर इनमें दो तीन छेद हो जाने से ये पानी के लिए बेकार हो गए होंगे, इसीलिए मकान मालिक ने इन्हें यहाँ छोड़ दिया होगा। तीनों दोस्तों ने आरी लाकर इन दोनों ड्रम के ऊपर के हिस्से काटकर अलग कर दिए, और इन्हें नाँद का रूप दे दिया। फिर वे बाजार से गाय का चारा खरीद कर लाये। उन्होंने दो बैग में चारा भरकर रख लिया। अगले दिन प्लांट पर जाते समय इस चारे को अपने साथ कैब में रख लिया। गाड़ी की डिक्की में दोनों ड्रम भी रख लिए। हालाँकि इन दोनों ड्रम को रखने के लिए उन्हें ड्राईवर को राजी करने में थोड़ी परेशानी उठानी पड़ी। ड्रम के कारण डिक्की का दरवाजा भी खुला–सा रहा।

जब रास्ते में कूड़े वाली जगह आई, तब तीनों दोस्तों ने उतरकर सड़क के किनारे जहाँ कूड़ा पड़ा रहता था, वहाँ दोनों ड्रम थोड़ी थोड़ी दूरी पर रख दिए और बैग का चारा उन दोनों में पलट दिया। फिर तीनों उत्साही नौजवान अपने काम पर चले गए। जब शाम को वे लौटकर उसी रास्ते से निकले तो उन्होंने देखा कि आज गाय कूड़े में मुँह नहीं मार रही थीं, बल्कि ड्रम में से चारा खा रही थीं। तीनों के चेहरे पर एक विजय भरी मुस्कान आई और उन्होंने दोनों हाथ उठाकर एक दूसरे को 'हाय फाय' दिया। अब वे रोज सुबह जाते वक्त बैग में चारा लाते और इन ड्रम में डाल जाते।

आसपास से निकलते लोग कभी–कभी रुककर इनको देखने लगते। किसी किसी ने उनके काम की तारीफ भी की। कुछ लोग बजाय प्रशंसा करने के, कुछ नकारात्मक बातें भी कहते। ऐसा भी कहते कि उन्होंने बेकार का झंझट कर दिया है, चारा मिलने पर और ज्यादा मवेशी आने लगेंगे, वगैरह–वगैरह। पर सही काम करने वाले ऐसी बातों की फिक्र नहीं करते, बस अपने काम में लगे रहते हैं। उन तीनों को खुशी थी कि उन्होंने छोटा सा ही सही, पर एक अच्छा काम किया है।

कुछ दिन बाद इन दोस्तों के मकान मालिक मिस्टर खंडेलवाल आये, किराया लेने के लिए। अपनी आदत के मुताबिक उन्होंने पूरे मकान का एक चक्कर लगाया। फिर पिछवाड़े में ड्रम न देखकर उन्होंने उनके बारे में पूछा। शशांक ने उन्हें गाय के चारे की सारी घटना सुना दी। सब सुनकर वे बहुत खुश हुए। जब तीनों दोस्तों ने उन्हें मकान का किराया दिया, तो मिस्टर खंडेलवाल ने उसमें से एक हजार रुपए उन्हें लौटाते हुए कहा, 'ये रुपए गाय के चारे के लिए रख लो। तुम लोग जो अच्छा काम कर रहे हो, उसमें मेरा भी कुछ सहयोग हो जायगा। दोस्तों ने सहर्ष उनकी बात मान ली।

फिर एक दिन इन दोस्तों को क्या सूझी कि उन्होंने चारा खाती हुई गायों का फोटो लिया, और अपने इस प्रयास को सोशल साइट्स पर डाल दिया। शायद इससे प्रेरणा लेकर और लोग भी ऐसा कोई कदम उठाएं। दूर कहीं से एक पुराना गाना सुनाई दे रहा था।

'ज्योत से ज्योत जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।'

मां का प्यार अनमोल होता है

- रामकुमार शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, विद्या भारती

मां के जन्म दिवस पर मां और बेटा बाजार में साड़ी खरीदने गये। कपड़े की दुकान पर वह जैसे ही पहुंचे, दुकानदान ने उनसे पूछा क्या चाहिए? आज मेरी मां का जन्मदिवस है मुझे मां के लिए एक साडी चाहिए। मां को एक साड़ी पसंद आ गयी। दुकानदार ने उस साड़ी की कीमत दो हजार रुपये बतायी। अधिक मूल्य सुनकर मां और बेटा एक दूसरे का मुंह ताकने लगे क्योंकि बेटे के पास केवल पांच सौ रुपये ही थे। मां ने दुकानदारा से सस्ती साड़ी दिखाने के लिए कहा। बेटे का मन उसी साड़ी पर अटका था जो उसकी मां को पसन्द थी। बेटा धीरे से दुकानदार के पास जाकर बोला मेरे पास पांच सौ रुपये हैं अभी आप पांच सौ रुपये ले लीजिए शेष पैसा मैं आपकी दुकान पर काम करके चुका दूंगा। दुकानदार ने बेटे की आंखों में मां के लिए सच्चा प्यार देखा और उसने वही साड़ी जो उसकी मां को पसन्द थी उसे दे दी और लड़के से कहा कि कल से दुकान पर काम करने आ जाना। बेटे ने वही साड़ी घर जाकर मां को दी जो उन्होंने पसन्द की थी। इस पर मां की आंखे पुत्र का अपने प्रति प्यार देखकर भर आयी।

सांयकाल दुकानदार दुकान बंद करके जब घर पहुंचा तो उसने देखा कि उसकी मां जो दो साल से बिस्तर पर थी वो अपने पैरों से चलती हुई मिली। अगले दिन जब वह लड़का काम करने हेतु दुकान पर गया और उसने पूछा अंकल मुझे क्या काम करना है। दुकानदार ने कहा तुम्हे कोई काम नहीं करना है। तुम तो मेरे लिए फरिश्ते बनकर आये हो, तुम्हारे कारण मेरी मां ठीक हो गयी है। हमेशा अपनी मां से ऐसा ही प्यार करना और कभी उनकी आंखों में आंशू मत आने देना। यह सुनकर लड़के की आंखे आंसुओं से भर आयी। उसने दुकानदार को धन्यवाद दिया और घर लौट गया।

मां का प्यार अनमोल होता है और जो सन्तान सच्चे दिल से अपनी मां का सम्मान करती है उसके जीवन में अवश्य खुशियां आती हैं। इस दुनिया में माता-पिता की सेवा से बढ़कर और कोई धन नहीं है।

राखी का मोल

ठहरो हाथ हटा लो पीछे इसका मोल जान लो।
चुका सको यदि कीमत इसकी निश्चय राखी भले बांध लो।।

सस्ती राखी इसे न समझो सस्ते नहीं सू के धागे
जिसके भुजदंडों मे बल है वही बढ़ाना निज कर आगे
नही मिलेगी पावन राखी चांदी के टुकड़ों के बदले
हिम्मत हो कीमत देने की तो मणिबन्ध बढ़ाना आगे

कान खोलकर कीमत सुन लो थोड़ा मेरी ओर ध्यान दो।
चुका सको यदि कीमत इसकी निश्चय राखी भले बांध लो।।

इसी भुजा को समर-भूमि में अगर कटाने की हिम्मत हो
मां की रक्षा हेतु हृदय में शीश चढ़ाने की हिम्मत हो
भालों से निज वक्षस्थल को अगर बिधाने की हिम्मत हो
आओ तुम्हें बांध दूं राखी अगर बंधाने की हिम्मत हो

मां के कटे हुए अंगों को पुनः मिलाकर अगर बांध दो।
चुका सको यदि कीमत इसकी निश्चय राखी भले बांध लो।।

उस राणा की भांति समर में चमक उठे यदि खड्ग तुम्हारा
झंडे को फहराने के हित करो प्रवाहित शोणित धारा
मां की ओर तनिक भी कोई अपनी दूषित दृष्टि उठा ले
उन आंखों में भोंक सको तुम पल भर में ही लाखों भाले।
कान खोलकर कीमत सुन लो थोड़ा मेरी ओर ध्यान दो।
चुका सको यदि कीमत इसकी निश्चय राखी भले बांध लो।।

राममंदिर ने बदल दी अयोध्या की आर्थिकता

- अशोक सिन्हा, उपाध्यक्ष, विश्व संवाद केन्द्र, लखनऊ

देवताओं के कहने पर ही सूर्यपुत्र वैवस्वत मनु ने अयोध्या को राजधानी के तौर पर स्थापित किया था। यह राम के धनुष के अग्रभाग पर बसी नगरी है इसीलिए ये युद्ध में अपराजेय मानी जाती है। इसका उल्लेख स्कन्द पुराण व रामायण सहित कई ग्रंथों में है। भगवान राम, भगीरथ, हरिश्चंद्र, दिलीप जैसे प्रतापी राजाओं व आदिनाथ सहित पांच तीर्थंकरों की जन्मस्थली, गौतमबुद्ध के 16 वर्षावास की तपस्थली, और वैदिक ग्रंथों के अनुसार राजा और राज्य की परिकल्पना की पहली सरकार नगरी अयोध्या पाँच हजार वर्षों से भी पुरानी नगरी है। भारत के राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा वर्ष प्रतिपदा विक्रमी संवत् 2083 के शुभ अवसर पर अयोध्या के श्रीराममंदिर में श्री रामयन्त्र की स्थापना से मंदिर निर्माण की परिपूर्णता हो चुकी है। इस परिपूर्णता से सांस्कृतिक उत्थान के साथ-साथ आर्थिक उन्नति का नया सूर्य भी अयोध्या में प्रकाशित हो रहा है। क्या मंदिर रोजगार सृजन कर सकता है? क्या मंदिर से आर्थिक स्थिति सुधर जाएगी? ऐसे सवाल राम के अस्तित्व को ही नकारने वाले विरोधी पक्ष के लोग बार बार उठा रहे थे। वस्तुतः मंदिर और तीर्थ आध्यात्म और संस्कृति के केंद्र होने के साथ ही एक सघन अर्थतंत्र का गढ़ बन कर समाज को समग्रता में लाभान्वित भी करतें हैं। किसी समय में मंदिरों की पहचान बड़े वस्तु विक्रय केंद्र के रूप में भी होती थी। मंदिर छोटे व्यापारियों को ऋण भी देते थे। कृषि क्षेत्र में नहर परियोजनाओं और तालाबों की खुदाई के द्वारा मंदिरों के योगदान के उल्लेख आज भी शिलालेखों में मिलते हैं। मंदिर भारत में कला के अद्वितीय केंद्र रहें हैं। मंदिरों से सामाजिक हितों की कई गतिविधियां भी संचालित होती रहीं हैं। मंदिर सामाजिक जीवन के साथ साथ आर्थिक विकास को भी गति प्रदान करतें हैं।

सनातन संस्कृति और धर्म के प्रति श्रद्धा के भाव ने उत्तर प्रदेश के अयोध्या में पयर्टन की समृद्धि की राह दिखा दी है। अयोध्या में धार्मिक पर्यटन ने नया कीर्तिमान बनाया है। प्रभु राम की जन्मस्थली आस्था का बड़ा केंद्र बन कर उभरा है। यहां श्रद्धालुओं का आकर्षण लगातार बढ़ रहा है। अयोध्या में पयर्टकों की वर्ष 2023 में जहां संख्या मात्र 5.75 करोड़ थी जो वर्ष 2024 में 16.44 करोड़ हो गई थी । वर्ष 2025 में यह संख्या 29.96 करोड़ तक पहुंच गई है। वर्ष 2026 में यह संख्या कहां तक पहुंचेगी अनुमान लगाना कठिन होगी। प्रदेश के पर्यटन मंत्री जयबीर सिंह ने बताया की उ. प्र. पयर्टन नीति 2022 के तहत राज्य सरकार पर्यटन सर्किटों जैसे रामायण सर्किट, ब्रज सर्किट, महाभारत सर्किट, बुंदेलखंड सर्किट और बौद्ध सर्किटों को व्यवस्थित रूप से सुदृढ़ बना रही है। बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। वर्तमान में 1283 करोड़ से अधिक के विकासकार्य प्रगति पर हैं। सरकार गाइड, नाविकों, टैक्सी चालकों और स्थानीय हितधारकों को प्रशिक्षण भी दे रही है।रामनगरी अपार संभावनाओं के प्रति आश्वस्त हो रही है। आवागमन और कनेक्टिविटी में निरंतर विकास होता जा रहा है। जब से रामनगरी में राममंदिर परिपूर्ण हुआ है तब से उसमें गजब का निखार आया है। कभी बहुत शांत और उदासीन रहने वाली अयोध्या अब दिन रात चहल-पहल से भरी रहती है।महर्षि बाल्मीकि

अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, छह प्लेटफार्म और 50,000 यात्रियों की क्षमता वाला अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन, चार लेन वाला राम पथ, शानदार भक्ति पथ, सुल्तानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग, राम लक्ष्मण भरत, हनुमान, गरुड़ और जटायु के नामों पर आधारित छह भव्य प्रवेश द्वार, इलेक्ट्रिक - हाई ब्रीड आधारित सार्वजनिक परिवहन प्रणाली, वॉटर मेट्रो, गुप्ता घाट का जल नौका विहार लाखों को सुविधा और रोजगार दे रहा है। नगरीय क्षेत्र में स्वच्छता, जल निकासी और सीवेज प्रबंधन से अयोध्या स्मार्ट सिटी का रूप ले चुकी है। धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों के सौंदर्यीकरण और विकास से लाखों रोजगार सृजन हुए हैं। फाइव स्टार सहित अनेकों होटल, रेस्तरां, अतिथि गृह, धर्मशालाओं का जाल बिछा है।

अयोध्या निरंतर विस्तार करती जा रही है। विरासत, कला, और धार्मिक स्थानों का संरक्षण किया जा रहा है। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए परिक्रमा मार्ग, सूर्यकुंड का पुनर्निर्माण, लेजर शो से अयोध्या धाम चमक उठी है। हजारों नाविकों को रोजगार मिला है और उनकी आमदनी चौगुनी हो रही है। प्रशासनिक, शैक्षणिक, व्यापारिक और लॉजिस्टिक क्षमता का विस्तार हुआ है। कुम्हार, बढ़ई, मजदूर, प्लम्बर, सबके लिए काम के अवसरों में दसगुणे की वृद्धि हो चुकी है। स्वास्थ्य और चिकित्सा सेवाओं के बुनियादी ढांचे का विकास और विस्तार दोनों हुआ है।

आध्यात्मिक जगत का रुझान यहां बढ़ रहा है। देश के प्रमुख कथावाचक और धार्मिक संगठन यहाँ पर अपने धार्मिक कार्यक्रम आयोजित कर रहें है। मैथ मंदिरों की आमदनी बेतहाशा बढ़ी है। अयोध्या सेलिब्रिटी डेस्टिनेशन के रूप में विकसित हो गई है। डोमिनोज, पिज्जा हट, ला पिनोज जैसी चौन के साथ देशी खान- पान, दक्षिण भारतीय शैली के उडुपी और करी लीफ के कई आउटलेट यहाँ खुल चूकें है। विश्व भर के पयर्टक तथा अप्रवासी भारतीयों का जमावड़ा यहाँ निरंतर बना रहता है।

केवल अयोध्या नगरी ही नहीं इसके आसपास के सभी क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहें हैं। प्रभु राम से जुड़े अन्य पौराणिक स्थल विकसित हो रहें हैं। पौराणिक कुंडों का विकास हुआ है। आसपास के गांवों तक की जमीन चौगुने मूल्य के हो गये हैं। सुल्तानपुर, बस्ती, बाराबंकी, रामसनेहीघाट, गोंडा, गोरखपुर सबका तेजी से विकास हो रहा है। क्षेत्र का विकास केवल पर्यटन पर निर्भर न रहे इसके लिए जिले में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे यानी लखनऊ से बलिया तक छह लेन मार्ग के निकट ओद्योगिक क्षेत्र विकसित किया जा रहा है। अयोध्या में आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय, महर्षि वेद विज्ञान पीठ रामायण विश्व विद्यालय, पेट्रोलियम संस्थान, राजर्षि दशरथ मेडिकल कॉलेज, तीन सौ शैय्या का चिकित्सालय आदि ने अयोध्या की आर्थिकता को विकास की उड़ान को नए पर लगा दिये हैं।

अयोध्या विकास के नए कीर्तिमान रच रही है। सप्तपुरियों में प्रथम अयोध्या का पुनर्निर्माण, नव निर्माण मंदिर की धर्म ध्वजा के समान आसमान में लहरा रहा है। अयोध्या में केवल भारतीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान का सूर्य ही नहीं विकास और प्रगति का सूर्य भी चमकने लगा है।

रोजगार सूचना

इंटर्नशिप एवं परीक्षा कार्यक्रम

(Employment Advertisements, Internships & Examination Schedule: 01 मई – 31 मई 2026)

~मानस वर्मा
सहायक प्रोफ़ेसर, अर्थशास्त्र,
दिल्ली विश्वविद्यालय

क्रम संख्या (Serial No.)	अंतिम तिथि / परीक्षा तिथि (Closing / Exam Date)	विज्ञापन / परीक्षा का नाम (Advertisement / Exam Name)	QR Codes For direct Link
1	15 मई 2026	National Board of Examinations – Joint Director, etc.	स्कैन करें
2	मई 2026 (जारी प्रक्रिया)	SSC GD Constable Physical Test	स्कैन करें
3	11 मई – 31 मई 2026	CUET (UG) 2026 – NTA	स्कैन करें
4	24 मई 2026	UPSC Civil Services Preliminary Exam 2026	स्कैन करें

★ महत्वपूर्ण सूचना ★

अभ्यर्थियों को सलाह दी जाती है कि आवेदन से पूर्व संबंधित विभाग की आधिकारिक वेबसाइट अवश्य देखें।